



॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

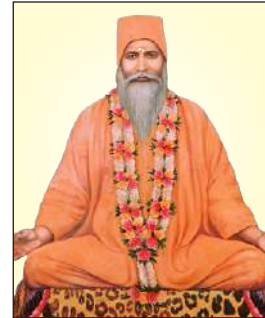
15 अगस्त 2026

वर्ष 19 अंक 5

कुल पृष्ठ - 32 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्गुरु टेऊराम अमृतवाणी

आज्ञा पाकर मन्त्री महोदय ने एक सुन्दर राजकन्या के साथ राजकुमार का सम्बन्ध जुड़वा कर शुभ मुहूर्त निकलवा कर साथ-साथ में विवाह व राज्याभिषेक दोनों महोत्सव मनाने के लिये बड़ा आयोजन करा कर राजा के पास जा निवेदन कर कहा कि हे राजन् ! आपकी आज्ञा का पालन कर लिया गया है। समय आने पर पूरे राजनगर को रंग-बिरंगे तोरणों-पताकाओं से सजाया गया और राज भवन का तो कहना ही क्या ! वह तो स्वर्ग के समान दिखलाई दे रहा था। और राज भवन के मुख्य द्वार पर शुभ घड़ियों को जतलाने वाले ढोल, नगाड़े, मृदङ्ग, तुरहियाँ तथा और भी अनेक बाजे-गाजे बज रहे थे और शङ्ख ध्वनियाँ हो ही थीं, बहुत से देशों के राजा लोग भी पधारे थे। विवाह के शुभ दिन पर सजाई गयी राजसभा में राजे लोग विराज रहे थे। राजपरिवार व प्रजागण भी राजसभा में विराज रहे थे। राजा स्वयं विराजमान हो रहा था।



एक तरफ से बाजे-गाजे बज रहे थे, दूसरी ओर बन्दीजन भाट-चारण स्तुति कर रहे थे, तीसरी ओर आतिशबाजी जलाई जा रही थी, चौथी ओर से नाच-गान हो रहा था, बीच सभा में बनाए गये सुन्दर सिंहासन पर मोर-मुकुट बाँधे हुए राजकुमार शोभा पा रहा था। विवाह में होने वाले कुल परम्परा के सभी मंगल कार्य रानियों व पण्डितों द्वारा किये जा रहे थे। चारों ओर से महा आनन्द छा रहा था। राजा ने मन्त्री को बुला कर यह आज्ञा दी कि स्वाङ्गी को जाकर कहो कि आज बबर शेर का स्वाङ्ग पहन कर सभा में आवे। आज्ञा पाकर सचिव ने जाकर स्वाङ्गी को राजाज्ञा बता दी। आज्ञा पा कर स्वाङ्गी बहुत प्रसन्न हुआ और सिंह का स्वाङ्ग धारकर राजसभा में आकर इधर-उधर घूम-फिरकर खूब दहाड़ने लगा। दहाड़ने का भयंकर शब्द सुन कर बच्चे लोग तो डर के मारे भागकर जा माँ की गोदी में छिपे। डरपोक लोगों के साँस फूलने लगे, वीर लोगों का और भी साहस बढ़ने लगा। ऐसे ही वह शेर खेलता-कूदता वहाँ जा पहुँचा जहाँ पर राजकुमार विराज रहा था। खेल देख कर सभी खुश हो रहे थे। यह देख कर राजकुमार ने अपने हाथों व आंखों से अपमानजनक चेष्टाएँ कर कूदते हुए शेर को एक धूक मारी। इस पर उस शेर ने एकदम राजकुमार को ऐसा तो पँजा मारा जो राजकुमार सिंहासन से गिर पड़ा और मर गया।

यह दशा देख कर सारी सभा में हाहाकार मच गया, चारों ओर सन्नाटा छा गया। शेर तो अपने डेरे पर चला गया, रानियाँ रोने-चिल्लाने लगीं, राजा ने स्वाङ्गी को पकड़ लाने के लिए मन्त्री को आज्ञा की। आज्ञा पाकर सचिव ने

शेष पेज नं. 2 पर...

स्वाङ्गी को पकड़वा कर राजा के सामने लाकर खड़ा कर दिया। अपने इकलौते लड़के का ऐसे शुभ अवसर पर मारे जाने का संताप राजा के हृदय को जला रहा था, जिगर फट रहा था, सो अपराधी को सामने देखकर एकदम आज्ञा दी कि जल्दी इस निर्मम हत्यारे को फाँसी पर चढ़ा दो। प्राणों को सुखा डालने वाली इस कठोर आज्ञा को सुन कर स्वाङ्गी थरथराता हुआ हाथ जोड़ कर कहने लगा कि हे पृथ्वीनाथ! आप राजा हो, राजाओं का न्याय ही भूषण है, ऐसा बताया गया है, सो आप न्याय तो करो। अगर मुझ पर मृत्युदण्ड लागू हो तो फिर आप मुझे जरूर फाँसी पर चढ़ा दो। यह सुन कर और भी क्रोध से भर कर राजा कहने लगा कि अरे मूर्ख ! न्याय किसका। आज आपने एक बड़ा भारी अपराध कर डाला है। स्वाङ्गी फिर भी नम्र प्रार्थना कर कहने लगा हे राजन् ! आप मेरी बात तो सुनो। फिर जो आप की इच्छा हो वह कीजिये।

इस पर राजा रोता और विलाप करता हुआ कहने लगा कि अरे नराधम ! न्याय-न्याय चिल्ला रहे हो, पर न्याय क्या करें, यह सब सुन कर वहाँ पर बैठे राजा लोग कहने लगे कि राजन् ! इस स्वाङ्गी की बात अवश्य सुननी चाहिये। यह सुन कर राजा ने स्वाङ्गी को कहा- अच्छा ! बताओ तो सही ! मेरे लड़के को आपने क्यों मारा? स्वाङ्गी ने नम्र होकर कहा कि हे राजन् ! बबर शेर का स्वाङ्ग पहन कर आने के लिए आपने आज्ञा दी थी, सो आज्ञा पाकर आप का मनचाहा स्वाङ्ग पहन कर सभा में आकर खेलने-कूदने लगा, वहाँ पर बैठे लोगों में से किसी एक छोटे बच्चे तक को भी मैंने हाथ नहीं लगाया। फिर राजकुमार के सामने भी जाकर खेलने लगा, मुझे खेलता हुआ देख कर उस ने मुझे धूक मार कर मेरा अपमान किया, इसलिये मैंने उस पर घातक प्रहार किया। क्योंकि बबर शेर कभी भी अपमान को सहन नहीं करते, और उस समय मैं भी बबर शेर के स्वाङ्ग को धारण किये हुए था।

आशय यह कि अपमान को सह कर शेर के स्वाङ्ग को कैसे लज्जाता। हे राजन् ! अब आप ही बताइये कि मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया है, जो मुझे फाँसी पर चढ़ाया जा रहा है। स्वाङ्गी के युक्तियुक्त वचनों को सुनकर सारी राज-सभा जिस में सब नीतियों को जानने वाले बड़े-बड़े राजा लोग भी बैठे थे, चुप हो गयी। पाँच मिनट के बाद सब राजा से कहने लगे कि हे राजन् ! इस स्वाङ्गी का कोई अपराध नहीं है, इसलिये इसे छोड़ दीजिये। बैठे हुए राजा लोगों के वचन सुन कर राजा ने स्वाङ्गी को मुक्त कर दिया। मुक्त होकर स्वाङ्गी तो अपने डेरे पर चला गया। परन्तु राजा की मानसिक पीड़ा शान्त नहीं हुई। इसलिये विकल होकर कहने लगा कि हे सचिव ! अब क्या होगा? यह सुन कर मन्त्री ने भरोसा दिलाते हुए कहा कि हे राजन् ! आप चिन्ता मत करें, मैंने एक उपाय ढूँढ़ निकाला है, अगर चक्कर में आ गया तो अभी थोड़ी सी देर में ही आपके सामने स्वाङ्गी को फाँसी लगा देंगे। यह कहकर स्वाङ्गी के पास आ कर मन्त्री ने स्वाङ्गी को कहा कि हे नटवर! आप तो जानते ही हो कि राजा का इकलौता लड़का मारा गया है। अब वहाँ पर सारी सभा शोक समुद्र में डूबी जा रही है। राजा व रानी तो घड़ी घड़ी मूच्छित हो जाते हैं। सो अब आप विरक्त शिरोमणि श्री शुकदेव मुनि का स्वाङ्ग धारण कर वहाँ चल कर ऐसा उपदेश दें ताकि उन लोगों का शोक दूर हो जाय।

स्वाङ्गी को ऐसा कह कर मन्त्री ने सभा में आकर मुनि के लिये एक सुन्दर आसन बिछवाया, स्वर्ण मुद्राओं व मोतियों के भरे दो थाल मंगवा कर वहाँ पर रखवा दिये। इतने में स्वाङ्गी भी मुनि श्री शुकदेव जी का स्वाङ्ग धारण कर सभा में आ पहुँचा। उसे आया देख कर सारी सभा ने उठ कर प्रणाम किया। महा सचिव ने उसे सजाए हुए आसन पर बिठाया। मुनि शुकदेव जी के सभा में आते ही सारी सभा में शान्ति छा गयी, फिर महामन्त्री ने उठकर हाथ जोड़कर मुनि शुकदेव जी को प्रार्थना की कि हे भगवन् ! आज राजपुत्र का स्वर्गवास हो गया है सो सब लोग बड़े दुःखी हो रहे हैं आप अपने श्रीमुख से कुछ ऐसे वचन सुनायें ताकि हम सब के चित्त को शान्ति मिले। यह सुनकर श्री शुकदेव जी तत्त्व का उपदेश कर कहने लगे कि यह सारा संसार जो दिखलाई पड़ रहा है, वह असार व नश्वर है। ये शरीर भी नाश होने वाले व क्षण-क्षण में बदलने वाले हैं। और इस शरीर में रहने वाला जो जीवात्मा है जिससे यह शरीर शोभायमान हो रहा है उसका भूत, भविष्य व वर्तमान तीनों कालों में कभी भी नाश नहीं होता।

॥ ॐ सत्नाम साक्षी ॥
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 अगस्त 2026

वर्ष 19

अंक 5

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
संरक्षक-मार्गदर्शक-प्रेरणास्त्रोत
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लखनऊ, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप को सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा ब्लाट्स एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

our website : premprakashpanth.com

भगवान श्रीकृष्ण महिमा

जब जब होइ धर्म की हानि बड़े पाप व्यभिचार,
त्रस्त धरा अत्याचारों से करते हाहाकार।
धर्म सत्य की रक्षा भक्तों का करने उद्धार,
तब तब दुष्ट दलन को हरि जग में लेते अवतार।
भाद्र मास कृष्णाष्टमी प्रभु जन्मे कारागार,
रूप देख वसुदेव देवकी नमन करे बहु बार।
ऐसी लीला रची कृष्ण ने खुल गये सारे द्वार,
अर्द्धरात्रि वसुदेव ले गये सुत को यमुना पार।
कृष्ण वृत्त स्वयं में है लीलाओं का भण्डार,
जो भक्ति से पढ़े सुने वो पावे सूख अपार।
लीन्हे प्राण पूतना के अरु दुष्ट बकासुर मारा,
नृत्य करे कालिया के फन पर सुख पावे ब्रज सारा।
गोप गोपियां राधा संग लीलाएँ रची अनन्त,
गली गली प्रभु चरित सुनावे कृष्ण भक्ति कवि संत।
दुष्ट दुशासन द्रोपदी को जब भरी सभा में लाया,
सुन पुकार धाए तुरन्त अबला का चीर बढ़ाया।
गुरुजन बन्धु बान्धवों पर कर सकूं न शर संधान,
पार्थ को क्षत्रिय धर्म बता दीना गीता का ज्ञान।
धर्मयुद्ध अरु कर्मयोग से गूढ़ तत्त्व समझावे,
जिनका पालन करते मानव मुक्ति मार्ग को पावे।
भक्तिपूर्वक कर्म करो तुम फल की चिन्ता छोड़ो,
माधव का नित सुमरण करो चरणों से नाता जोड़ो।

अनुक्रम	अनुक्रमणिका विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊराम अमृतवाणी	1-2
02.	सत्य-धर्म का महत्व व सत्संग का अर्थ (स्वामी सर्वानन्द अमृतवाणी)	4-5
03.	भक्ति-प्रेम और ज्ञान की अलख जगाने वाले सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी	6-7
04.	एकादशी व्रत के प्रति निष्ठा (सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी), भजन	8
05.	मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज(संक्षिप्त जीवन परिचय), भजन	9-10
06.	सद्गुरु टेऊराम जी महाराज द्वारा रचित वाणी में सावन मास की महिमा	11-13
07.	रक्षाबंधन क्यों ?	14
08.	कान्हा और कुम्हार, भगवान श्रीकृष्ण बने शिकार (रोचक आख्यान)	15-16
09.	सच्ची निष्ठा का फल (श्री गणेश जयंती विशेष)	17
10.	खीर की प्रसादी (राधाष्टमी विशेष)	18
11.	स्वामी टेऊराम चालीसा भावार्थ सहित	19-24
12.	सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज वर्सी उत्सव समाचार	25
13.	सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज जल समाधी दिवस हरिद्वार में मनाया गया	26
14.	जन्मोत्सव, वर्सी उत्सव, जन्माष्टमी सूचना	27
15.	सद्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज जन्मोत्सव प्रारंभ, जन्मोत्सव भजन	28
16.	परम पूज्य स्वामी जीवनमुक्त जी महाराज वर्सी उत्सव समाचार	29
17.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	30
18.	व्रत-पर्व-उत्सव, अमरापुर गमन	31
19.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	32

our website : premprakashpanth.com प्रेम प्रकाश सन्देश इन्टरनेट पर पढ़ने के लिये क्लिक करें- **www.issuu.com/premprakashsandesh**



सत्य-धर्म का महत्त्व व सत्संग का अर्थ

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अमृतवाणी

एक बार की बात है कि रावलपिंडी के सनातन मंदिर में प्रवचन करते हुए सत्य-धर्म पर बोलते हुए स्वामीजी कहने लगे कि सत्य बोलना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है. अपने या अपने परिवार और मित्रों अथवा परिचित लोगों के सुख स्वार्थ के लिये कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिये.

इस विषय पर एक कथा सुनाते हुए स्वामीजी कहने लगे कि कुन्दनपुर नामक एक गांव था, गांव के लोग प्रायः भोले भाले और कम पढ़े लिखे तो होते हैं, परन्तु उनमें सच्चाई, ईमानदारी, सरलता, सादगी आदि गुण अधिक मात्रा में होते हैं. उस गांव में सत्यवादी नाम का एक व्यक्ति भी रहता था. एक बार की बात है. एक तपस्वी देशाटन (घूमते-फिरते) करते हुए उस गांव में जा पहुंचे. गांव वालों के श्रद्धा-प्रेम को देखकर वह तपस्वी वहां ही ठहर गये. कुछ दिनों के पश्चात् यह तपस्वी गांव से थोड़ी दूर नदी के किनारे खड़े एक शीशम के विशाल छायादार पेड़ के नीचे बैठकर केवल पेड़ों के पत्ते फल खाकर और जल पीकर तपस्या करने लगे. उन्होंने बराबर बारह वर्षों तक कठोर तपस्या की. तपस्या के प्रभाव से उनको सिद्धि प्राप्त हो गयी. अपनी तपस्या को सफल जानकर तपस्वी बड़े प्रसन्न हुए. गांव के लोग प्रतिदिन वहां आते जाते रहते थे, परन्तु तपस्वी को तपस्या में लगा देखकर दूर से ही दर्शन कर चले आते थे. जब तपस्वी की तपस्या समाप्त होने का समाचार गांव वालों को मिला, तब तो पूरे गांव के लोग तपस्वी के दर्शन करने जाने लगे. दिन भर तो क्या, रात को भी बहुत देर तक तपस्वी के पास लोगों की भीड़ भाड़ लगी रहती थी.

‘चमत्कार को नमस्कार है.’ तपस्वी के अद्भुत कर्मों को देखकर लोग आश्चर्य में पड़ जाते थे, और बहुत प्रसन्न होकर तपस्वी की वाह वाह करते थे. तपस्वी की शक्तियों को देखकर गांव वालों का और भी श्रद्धा प्रेम बढ़ने लगा. गांव में जहां दो चार लोग आपस में मिलते तो बस! तपस्वी के विषय में ही चर्चा (बातचीत) करते. सिद्धियों के प्रभाव से तपस्वी का यश चारों ओर फैल गया. अब तो दूर-दूर के लोग भी तपस्वी के पास आने लगे.

उस गांव में जो सत्यवादी रहता था. वह था तो, एक



साधारण दुकानदार, परन्तु सत्य बोलना, सही तोलना, सत्य लेना, सत्य देना इत्यादि उसकी प्रत्येक क्रिया सत्य से पूर्ण थी. वह हंसी मजाक में भी झूठ नहीं बोलता था. सत्य के व्यवहार के कारण ही उसका नाम सत्यवादी पड़ गया था.

एक दिन कुछ लोग तपस्वी के दर्शन करने के लिये जा रहे थे तो रास्ते में उन लोगों का सत्यवादी से मिलन हो गया. बातचीत करते हुए उन लोगों ने सत्यवादी से कहा कि हम लोग तपस्वी के दर्शन करने के लिये जा रहे हैं. आप चलोगे? क्या आपने तपस्वी के विषय में कुछ सुना है? यह तपस्वी एक सिद्ध पुरुष है. वे अद्भुत कर्म दिखाते हैं. इस पर सत्यवादी ने कहा कि तपस्वी के विषय में सुना तो मैंने भी है, पर दर्शन प्राप्त नहीं हुआ है. सत्यवादी की बात सुनकर वे लोग कहने लगे कि यदि आपने दर्शन नहीं किया तो आज हमारे साथ चलो, आज रविवार है, बाजार वैसे ही बंद है. इस पर सत्यवादी ने कहा बहुत अच्छा, चलो तो चलें. ऐसा कहकर सत्यवादी उन लोगों के साथ तपस्वी के दर्शन करने को चल पड़ा.

वहां पहुंचकर उन लोगों ने तपस्वी को प्रणाम किया, सत्यवादीने भी प्रणाम किया. फिर सब लोग तपस्वी के ईर्द-गिर्द बैठ गये. बातचीत करते हुए उन लोगों ने सत्यवादी की ओर संकेत (इशारा) कर तपस्वी से कहा कि हे भगवन्! यह सज्जन आज पहली बार आपके दर्शन करने को आया है, अतः आप

सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश

बिना गुरु की भक्ति के आत्म-ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है।
ईश्वर से भी गुरु का महत्त्व बड़ा है।



कृपा कर इसको भी थोड़ा सा चमत्कार दिखा दें. तपस्वी और वे लोग अभी आपस में बातचीत कर ही रहे थे, तो ईश्वर की इच्छा से, पांच सात कपोत (कबूतर) ऊपर आकाश में उड़ते हुए जाते दिखायी दिये. तपस्वी को तो चमत्कार दिखाना ही था. सो कबूतरों की ओर देखकर तपस्वी ने ज्यों ही हाथ से संकेत किया, त्योंही वे सब कबूतर नीचे धरती पर तपस्वी के चरणों में आकर गिरे और सब मर गये. यह चमत्कार देखकर सब दर्शक और प्रशंसक खुश होने लगे, जयघोष कर तपस्वी की जयकार मनाने लगे, तालियां बजाने लगे. परन्तु सत्यवादी की दशा कुछ और थी. इस प्रकार निर्दोष मूक प्राणियों की हत्याएं अपने सामने देखकर सत्यवादी का हृदय दुःख और शोक से फटने लगा. उसका मन भर आया. दर्दभरी आवाज कर हाय! हाय! कर, पश्चाताप करने लगा. हाय!! यह क्या हो गया. इतनी हत्याएं. राम! राम!! मैं यहां क्यों आया? यदि मैं यहां न आता तो ये हत्याएं न होती. इन हत्याओं का कारण मैं ही हूं. अब यह पाप कैसे छूटेगा? सत्यवादी की यह दशा देखकर और कबूतरों को मरा देखकर जो लोग तपस्वी के गुण गाकर प्रसन्न हो रहे थे, उन सबका सिर शर्म के मारे नीचे झुक गया. सब लोग लज्जित होकर पश्चाताप करने लगे. तपस्वी का तो चेहरा ही उतर गया, उनकी अन्तरात्मा उसे धिक्कारने लगी. सत्यवादी ठंडी सांस लेकर हाथ जोड़कर तपस्वी को कहने लगा कि हे भगवन्! आप तो सत्पुरुष हैं, दया के सागर हैं, सर्व समर्थ हैं, ऋद्धियां-सिद्धियां आप की दासियां हैं. इस तरह इनको मरा पड़ा देखकर मेरी अन्तरात्मा दुःख पा रही है. आप इन निर्दोष मूक प्राणियों पर दया करें, कृपाकर इनको उड़ने की शक्ति प्रदान करें. मेरे ऊपर कृपा करें. सत्यवादी के वचन सुनकर और उसकी दशा (हालत) तथा दर्शकों और प्रशंसकों की भावना को देखकर तपस्वी बड़ी भारी उलझन में पड़ गये. अब क्या करूं? बहुत गूढ़ विचारों में पड़ गये. अन्त में निराश होकर दूसरा कोई उपाय न देखकर तपस्वी बहुत लज्जित होकर सत्यवादी को कहने लगा कि हे सत्यवादी! कबूतरों को जीवित करने के लिए आप कह रहे हैं, परन्तु मैं क्या करूं, क्या कहूं. इन कबूतरों को मैंने मार तो डाला, पर इनको जीवित करने की शक्ति मुझमें नहीं है. यदि मुझमें इतनी शक्ति होती तो आपके कहने से पहले ही मैं इनको जीवित कर देता. हे सत्यवादी! मैं स्वयं ही अपनी करनी पर पश्चाताप कर रहा हूं. जब सत्यवादी ने समझा कि सचमुच तपस्वी असमर्थ है, तब सत्यवादी राम राम बोलते हुए उठ खड़े हुए, स्वच्छ पात्र में जल भरकर मृत

(मरे हुए) कबूतरों के पास गये और उनकी प्रदक्षिणा की, फिर हाथ में जल लेकर मन में भगवान का स्मरण कर, बोले कि हे सर्व अन्तर्यामी! परिपूर्ण परमात्मा! यदि मैंने जन्म से लेकर आज तक, सत्य बोला है, सत्य का व्यवहार किया है, तो ये कबूतर जीवित हो जायें. ऐसा कहकर ज्योंही जल के छींटे पक्षियों पर डाले, त्योंही वे सब कबूतर जीवित होकर आकाश में उड़ते हुए चले गये. यह देखकर दर्शक लोग तो आश्चर्य में पड़ गये, परन्तु तपस्वी भी आश्चर्य में पड़ गया. उन्हें जो अपनी शक्ति पर अभिमान था, वह सब नष्ट हो गया. तपस्वी को बड़ी लज्जा आयी. हाथ जोड़ कर सत्यवादी से तपस्वी कहने लगे कि हे मेरे सज्जन! यह सिद्धि आपको कहां से और कैसे प्राप्त हुई? तपस्वी के द्वारा मुझे केवल मारने की शक्ति मिली है. आपने ऐसा कौन सा तप किया है, जो आपको जीवित करने की शक्ति भी मिली है. तपस्वी की बात सुनकर सत्यवादी ने नम्रता पूर्वक कहा, हे भगवन्! मैं तो गृहस्थी हूं. दुकान चलाता हूं. मैंने अपने जीवन में कोई भी जप, तप, योग, व्रत दान आदि नहीं किया है. एक बात अवश्य है, जो मैंने कभी झूठ नहीं बोला है. सदैव सत्य का व्यवहार करता हूं. शेष मुझे कुछ भी मालूम नहीं. मैं नहीं जानता यह शक्ति मुझ में कहां से और कैसे आयी? सत्यवादी की बात सुनकर, तपस्वी समझ गया और सहसा बोल उठा-

दोहा : सच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।

जिसके हिरदे सच बसे, तिस के हिरदे आप ॥

तपस्वी कहने लगा कि हे सत्यवादी! मैं आपकी बात समझ गया. यह सब शक्ति सत्य में है. जहां सत्य है वहां ही भगवान है. भगवान सब कुछ करने में समर्थ है. आपका जीवन धन्य है. सत्यवादी के संग से तपस्वी का मन बदल गया. चमत्कार दिखाना छोड़कर सत्य का मार्ग लिया, अंत में मोक्ष को प्राप्त किया.

**सन्तो हि सत्येन नयन्ति सूर्य, सन्तो भूमिं तपसा धारयन्ति ।
सन्तो गतिर्भूत भव्यस्त राजन्, सतां मध्ये नावसीदन्ति ॥**

सन्त लोग सत्य के प्रताप से सूर्य का संचालन करते हैं और सत्य की शक्ति धरती को धारण करती है. संत लोग भूत भविष्य और वर्तमान का सहारा हैं. संतों के सहारे रहकर कोई भी दुःखी नहीं होता.

आदि सचि जुगादि सच, है भी सच, नानकहोसी भी सच ॥

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

आज कल के लोगों को सिनेमा, सिगरेट, पान, सुपारी और चाय के अलावा कहीं भी सुख देखने में नहीं आता है ।



सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज जन्म दिवस पर विशेष आलेख (जन्मदिवस 28 अगस्त)

भक्ति, प्रेम, ज्ञान की अलख जगाने वाले महापुरुष सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज



सृष्टि विकास के लिये होता है महापुरुषों का अवतरण! एक विकास बाहरी, जो भौतिक संसाधनों द्वारा पूरा होता है और दूसरा व्यक्ति के आन्तरिक चेतना का विकास! वह भौतिक संसाधनों से नहीं अपितु आध्यात्मिक स्रोतों से ही संभव होता है. ऐसे आध्यात्मिक, धार्मिक स्रोत संत-महात्माओं द्वारा ही विकसित होते हैं. जिसके माध्यम से जिज्ञासु उस परम रस का आस्वादन करके अपने जीवन को आनन्दमय व भक्ति से परिपूर्ण कर देता है.

सन्त-महापुरुषों का जीवन स्वयं के लिये नहीं अपितु मानवता की भलाई व निःस्वार्थ सेवा के लिये होता है. संत तो स्वयं परमात्मा के ही अंश होते हैं. जो

समय-समय पर इस पवित्र धरा धाम पर अवतार लेते हैं.

महापुरुष अपने सुखों को तिलांजलि देकर समस्त संसार के जीव मात्र के कल्याण में सदैव तत्पर रहते हैं. साथ ही इस धर्मप्राण भारतवर्ष में भक्ति, प्रेम व शान्ति का प्रकाश फैलाते हैं.

ऐसे महापुरुषों की श्रेणी में हमारे परम पूज्य सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का स्थान वन्दनीय है. नाम ही के अनुरूप शान्ति प्रकाश! जो सदैव भक्तों के हृदय में शान्ति का प्रकाश फैलाते हैं, सबको शान्ति का पाठ पढ़ाते हैं. जिनका नाम लेने व दर्शन मात्र से संतप्त हृदय को सहज ही परम शान्ति की प्राप्ति होती है.

ऐसी ही प्रभु सत्ता की महान विभूति परम तपस्वी महावैरागी सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज! जिनके परम शिष्य थे महान कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज! जिनका जन्म श्रावण मास सन् १९०७ नारियल पूर्णिमा (श्री सत्यनारायण), रक्षा बन्धन के पवित्र दिन सिन्ध के सक्कर जिले के चक गांव में हुआ. आपके पिता का नाम श्री आसूदोमल एवं माता का नाम श्रीमती जुगलबाई था. दोनों बड़े ही संतोषी व संत सेवाभावी थे. जिसका प्रभाव 'महाराजश्री' के जीवन पर पड़ा.

मैत्री करुणा मुदिता, त्याग तपस्या रूप।

सतगुरु शान्तिप्रकाश जी, संत शिरोमणि अनूप।।

महाराजश्री का मन बाल्यावस्था में ही संसार से उपराम होकर परमात्म चिन्तन में स्थित हो गया. वे सदैव प्रभु भक्ति में तल्लीन रहते थे. समय के साथ महाराजश्री की प्रारम्भिक शिक्षा पाठशाला से शुरू हुई. किन्तु अचानक चेचक नामक बीमारी से उनके बाह्य चक्षुओं की ज्योति जाती रही. अनेक उपाय करने पर भी पुनः ज्योति वापस

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

हम सांसारिक सहारे छोड़कर भगवान की शरण लें तो
आपको चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होगी।



न आ सकी. तब माता-पिता उन्हें सिन्ध के प्रसिद्ध थल्ले वाले संत श्री साईं हरचूराम साहिब की शरण में ले आए. संतश्री ने कहा- चिन्ता की कोई बात नहीं! यह बड़ा महान संत बनेगा. संतश्री की वाणी सार्थक हुई.

समय पाकर महाराजश्री को भगवद् स्वरूप अवतारी महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज का दर्शन हुआ. कुछ समय तक आचार्यश्री का पावन सानिध्य, दर्शन व सत्संग, सेवा व सुमरण का लाभ प्राप्त हुआ. **‘महाराजश्री की निष्ठा, सेवा, स्मरण, एकाग्रता को देखकर पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज ने मंत्रदीक्षा देकर उन्हें अपना शिष्य स्वीकार किया.’**

आचार्यश्री की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वामीजी श्री अमरापुर दरबार (डिब्रू) पर पूर्ण श्रद्धाभाव, उत्साह, निष्ठा के साथ सेवा स्मरण में सदैव संलग्न रहते थे.

कुछ समय पश्चात् आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज से आज्ञा लेकर संस्कृत भाषा, गुरु-वाणी, रामायण इत्यादि सत्शास्त्रों के अध्ययन हेतु अमृतसर, हरिद्वार, काशी आदि स्थानों पर जाकर शिक्षा ग्रहण की.

आध्यात्मिक चिन्तन-मनन के पश्चात् गुरु का संदेश जन-जन तक पहुँचाया. पूरे विश्व में भ्रमण कर अपने ज्ञान द्वारा हजारों भक्तों को शान्ति व प्रेम का पाठ पढ़ाया. आचार्यश्री की आज्ञानुसार निष्काम सेवा कार्य में भी तत्पर रहकर मानव सेवा, समाज सेवा, मूक प्राणी अर्थात् जीवमात्र की सेवा करके अपने गुरु के यश कीर्ति को उज्ज्वल बनाया. आपने मृदुता, शीलता, शान्त सरल स्वभाव से सबको अपना बना लिया. कहते हैं ऐसे महापुरुषों के अवतार लेने से विश्व वसुन्धरा भी कृतार्थ हो जाती है.

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज के परम शिष्य गो-पालक, श्रीकृष्ण स्वरूप, परोपकारी, कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के प्रादुर्भाव पर समस्त विश्व की धरा वन्दनीय बन जाती है.

जिनके दर्शन मात्र से हृदय में प्रेम, भक्ति, ज्ञान की अलख स्वयं जाग्रत हो जाती है.

आप गुरु में पूर्ण आस्था व विश्वास रखते थे. गुरु को भगवान व इष्ट मानते थे. आप सदैव अपनी वाणी में कहते थे कि सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज व सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज साक्षात् रूप में आज भी हर समय हमारे साथ हैं. वे हमारी रक्षा करते हैं. प्रेरणा पुंज बनकर हमारे घट-घट में निवास करते हैं. उनके आशीर्वाद ने ही इस **‘सूर श्याम दास’** को इस लायक बनाया.

किसी काम के थे नहीं- छूता नहीं कोई छाँव।

कृपा भई गुरुदेव की- तो पूजन लागे पाँव।।

आप जब भी किसी बड़े संत-महापुरुषों से मिलते थे तो सदैव सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का ही परिचय देते थे. बड़ी बड़ी सत्संग सभाओं में एक बात बड़े ही डंके की चोट पर मर्मस्पर्शी स्वर में विनयपूर्वक कहते थे मेरे जैसे सूरदास का क्या मूल्य? **‘यह तो सब कृपा हमारे महायोगी आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊरामजी महाराज की है, जिसने मुझे इतना लायक बनाया.’** ऐसी विनयशीलता थी आपकी सद्गुरु टेऊरामजी महाराज के प्रति! इन्हीं सद्गुणों के कारण आप ध्रुव तारे के समान सदैव वन्दनीय व पूजनीय बन गये.

समय की गति और समुद्र की लहरों को कोई रोक नहीं सकता. ऐसे में मृत्युलोक का सभी को परित्याग करना पड़ता है. आपने अपनी जीवन लीला का संवरण १४ अगस्त १९६२ को वायु मण्डल में कर श्री अमरापुर धाम ब्रह्मलोक प्रस्थान किया. आपकी ज्योति महाज्योति में समा गयी. बहु प्रतिभाओं से विभूषित आपका अलौकिक जीवन हमारे लिये सदैव प्रेरणा व प्रकाश का पुंज बना रहेगा।

—संत श्री मोहनलाल जी (मोनूराम जी)

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

आत्म-ज्ञान, ब्रह्म-ज्ञान, ईश्वर-दर्शन कोई साधारण बात नहीं, इनका बड़ा महत्व है, और बड़ा ही रहस्य युक्त है। इस रहस्य को जानने के लिये शास्त्रों का गहन अध्ययन करना पड़ेगा। ‘श्री रामायण’, ‘श्री महाभारत’ यह कोई साधारण ग्रन्थ नहीं—ऋषिकृत ग्रन्थ हैं। पढ़ना हमें कब पड़ेगा? जब हमें जाना हो आगे।



एकादशी व्रत के प्रति निष्ठा

स्वामी शान्तिप्रकाश जन्मोत्सव पर विशेष

॥ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥

हमारा भारत धर्मपरायण देश है। इसमें कर्म की प्रधानता है। किया हुआ शुभ कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता। समय पर फलीभूत अवश्य ही होता है। अतः सभी को व्रत नेम अनुष्ठान जरूर करने चाहिए। महापुरुष स्वयं तो करते ही हैं ओरो से भी सत्कर्म करवाकर उनका भी कल्याण करते हैं।

ऐसे ही कर्मयोगी सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज को एकादशी का व्रत बहुत ही प्यारा था। स्वयं आत्म तत्व में स्थित होने के बावजूद भी वह स्वयं एकादशी का व्रत नियम से रखते थे। यहाँ तक कि मेलों में भी हजारों भक्तों को एकादशी व्रत महिमा बताकर सभी से व्रत रखवाते थे।

एक बार सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज विदेश लंदन की यात्रा पर गए थे। वहाँ पर सत्संग के माध्यम से 'एकादशी व्रत' की प्रेरणा दी।

वहाँ संतो ने पूछा कि स्वामी जी! आप एकादशी का व्रत क्यों रखते हैं...? आप तो सभी कर्मों से ऊपर उठे हुए हैं...?

तब स्वामी जी ने सरल भाव से कहा- सभी को प्रेरणा देने के लिए रखते हैं। हम करेंगे तो दूसरे भी करेंगे। अब आप ही बताओ...? यदि मैं यहाँ लंदन में एकादशी का व्रत नहीं रखता, तो ये लंदन वासी एकादशी का उपवास कैसे करते...? इन्हें क्या पता एकादशी का कितना महात्म्य है। संत महात्माओं को लोक कल्याण के लिए परमात्मा में स्थित होते हुए भी सत्कर्म करना चाहिए। व्रत अनुष्ठान करने चाहिए। जैसे श्री कृष्ण भगवान ने गीता में अर्जुन को कहा-

“योगस्थः कुरु कर्माणि”

शुभ कर्म सभी को करने चाहिए। अपने लिए नहीं करे पर दूसरे के लिए जरूर करें। एकादशी व्रत रखने का बड़ा फल मिलता है। स्वामी जी अक्सर भक्त नामदेव जी का प्रसंग सुनाते थे। नामदेव भक्त हमेशा एकादशी व्रत रखते थे और कहते थे कि- 'एकादशी जो व्रत राखे-काहे को तीर्थ जाई !'

जो पूर्ण श्रद्धा भाव से एकादशी का व्रत रखता है।

उसे तीर्थ जाने की आवश्यकता नहीं। उसे इस व्रत के रखने से ही सब फल मिल जाते हैं। स्वामी जी एकादशी की बहुत महिमा गाते थे। उनकी प्रेरणा से ही सैकड़ों लोग व्रत रखते थे।

ऐसे थे एकादशी व्रत के परम उपासक सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज।

शत-शत नमन...। कोटि-कोटि वन्दन...

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहन लाल (संत मोनू राम जी)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

भजन

शान्ति प्रकाश सतगुरु, धरती पर हैं पधारे

तर्ज : बिगड़ी मेरी बना ले, जयपुर के रहने वाले.. (कव्वाली)

थलु : देखो निराली सिंध के, चक गाँव के नज़ारे।

शान्तिप्रकाश सतगुरु, धरती पे हैं पधारे।।

1. गदगद् हुए पिताश्री, अवतार घर में आये
बजने लगीं बधाईयाँ, माता जुगल के द्वारे।।

2. पावन ये रक्षा बन्धन, पूनम की चाँदनी है।
इक चाँद है जमीं पर, दूजा गगन में प्यारे।।

3. गुरुदेव की छटा को घूँघट से चाँद देखे।
छिपता है बादलों में चंदा शर्म के मारे।।

4. चन्दा के संग तारे, यूँ झिलमिला रहे हैं।
दीपक से सतगुरु की, कोई आरती उतारे।।

5. आकाश से बरसती, बूँदे यूँ कह रही हैं।
फूलों की कर रहे हैं, बरसात देव सारे।।

6. घनघोर ये घटाएँ, ऐसे गरज रही हैं।

गुरु के जनम पे जैसे, 'मनोहर' बजे नगारे।।

देखो निराली सिंध के, चक गाँव के नज़ारे।

शान्तिप्रकाश सतगुरु, धरती पे हैं पधारे।।

—स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु टेकूराम अमृतोपदेश

अपने स्वास भगवत भजन में व शरीर परोपकार व धर्म में लगा लो।
क्योंकि काल के द्वारा वैसे ही एक न एक दिन मारे जाओगे।



आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की गुरुगद्दी के चतुर्थ पीठाधीश्वर मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संक्षिप्त जीवन परिचय

- सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्म - सिन्धी तारीख - १३ वैशाख - पूर्णिमा - ३० मार्च १९३० (रविवार) के दिन - सिन्ध के 'घुन्डन' गाँव में हुआ था। उनके पिताश्री का नाम 'श्री हीरानंद जी' और माता श्री का नाम 'मोतिलबाई' था।
- स्वामी जी ने नाम दान की दीक्षा 'सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज' से प्राप्त की थी।
- स्वामी जी श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के 'चतुर्थ पीठाधीश्वर' थे। 'महाराज श्री' ने १९६२ से २००० तक (३८ वर्ष) मण्डल के सेवा कार्यों को निष्ठा पूर्वक संभाला और श्री गुरुदेव की यश कीर्ति को चहुँ ओर फैलाया।
- स्वामी जी ने अनेक ग्रंथों की रचना की। जिसमें मुख्य - श्री अमरापुर दर्शन, नित्य नियम प्रार्थना एवं सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जीवन चरितामृत। इसी प्रकार स्वामी जी ने अनेक ग्रन्थ व भजनों की भी रचना की।
- स्वामी जी की 'गुरु के प्रति' अगाध निष्ठा थी। वे 'महर्षि सतगुरु सर्वानन्द जी महाराज' की खूब तन-मन से सेवा किया करते थे। श्री अमरापुर दरबार में सतगुरु सर्वानन्द जी के कमरे के पास ही एक छोटा सा कमरा बना हुआ था। वहीं निवास किया करते थे। जहाँ आज उनका 'चित्र प्रदर्शनी स्थल' बना हुआ है।
- स्वामी जी प्रातः ३ बजे से पहले उठ जाया करते थे। फिर 'सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज' की सेवा में दातुन, तोलिया, गर्म पानी आदि आवश्यक वस्तुएं पहले से ही तैयार करके रख देते थे। सेवा कैसे करनी चाहिए? ये इन महापुरुषों से सीखना चाहिए। स्वामी जी सेवा में सदैव तत्पर रहते थे।
- स्वामी जी आदर्श व मर्यादा की साक्षात् मूर्ति थे। समय की पाबंदी का विशेष ध्यान रखते थे। उनका जीवन सरल व सादा था। वे सादे वस्त्र धारण करते व भोजन भी सादा ही खाते थे।
- स्वामी जी सदैव 'आचार्य उपासना' को विशेष महत्व देते थे!

कहते थे- जैसे एक पेड़ की 'जड़' (मूल) को पानी देने से सारी टहनियाँ हरी-भरी हो जाती है। वैसे ही 'आचार्य श्री' की भक्ति करने से सबकी पूजा हो जाती है। ये ही सबसे बड़ी गुरु भक्ति है। अतः 'आचार्य श्री सद्गुरु टेऊराम जी महाराज'



की ही भक्ति-उपासना सभी को करनी चाहिए।

- स्वामी जी आचार्य श्री का महामन्त्र सतनाम साक्षी जपने पर विशेष जोर देते थे। गुरु मंत्र ही सर्वश्रेष्ठ है। भक्तों को 'गुरु मंत्र' देते समय आचार्य श्री की प्रतिमा देते थे और कहते थे तुम्हें इन्हीं का ही ध्यान-चिंतन करना है। स्वामी जी की श्री गुरु दरबार के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा थी। गुरु दरबार की सेवा स्वयं करते थे और सभी से करवाते भी थे। पदासीन होने पर भी अपने आप को हमेशा 'गुरु दर' का सेवादारी मानते थे।
- स्वामी जी सत्संग प्रारम्भ करने से पहले ये प्रार्थना- सद्गुरु सर्वानन्द हमें- अभय दान दीजिए...और फिर... जय जय-जय टेऊराम स्वामी - कृपा करो प्रभु अंतर्दामी...से पूर्ण किया करते थे।
- स्वामी जी को रामायण, गीता, भागवत, उपनिषद, वेद आदि अनेक शास्त्रों का भरपूर ज्ञान था। सभी को शास्त्र पढ़ने के लिये प्रेरित करते थे।
- स्वामी जी मे सादगी, समय की पाबन्दी, मर्यादा, निडरता, निर्भीकता, सेवाभाव, गुरुभक्ति, संतो से स्नेहभाव, गुरु समर्पण और 'आचार्य श्री' के प्रति निष्ठा आदि अनेक गुण विद्यमान थे।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

अपने-अपने धर्म में रहना चाहिये। अपना धर्म ही सुखदाई है।



- स्वामी जी अक्सर सिंधी बोली को बचाने के लिये कहते थे। सिंधी बोली हमारी 'मातृ भाषा' है। घर में सभी से सिंधी में बात करो। अपने धर्म व सिंधी बोली से प्यार करो। उसकी रक्षा करो। तभी हमारा सनातन धर्म व सिंधी बोली बचेगी।
- स्वामी जी सन- १९६६ में कुछ संतो को साथ लेकर सिन्ध यात्रा करने गए थे। वहां से 'सद्गुरु टेऊराम बाबा जी' की 'पावन जन्म स्थली- खंडू गांव' एवं 'श्री अमरापुर दरबार-टण्डा आदम' की 'पवित्र रज' साथ लाये थे। उस 'पवित्र रज' वर्तमान श्री अमरापुर स्थान जयपुर में दर्शनों के लिए रखा गया है।
- स्वामी जी सनातन हिन्दू धर्म की रक्षा के हेतु 'जनेऊँ व चोटी' धारण करने के लिये कहते थे। इसी के साथ कहते थे कि हमारे सिंधी समुदाय के इष्टदेव 'भगवान श्री झूलेलाल

जी' है। हमें उनकी पूजा अर्चना छोड़नी नहीं चाहिए। चाहे हम किसी भी पंथ या सम्प्रदाय को क्यों न मानते हो।

- स्वामी जी 'पावन चैत्र मेले' के शुभ अवसर पर सदैव कहते थे- मेले के मालिक - आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज है। हम तो उनके दास व सेवक हैं।
- स्वामी जी २६ अगस्त २००० शनिवार- एकादशी के दिन इस पंचभौतिक देह का त्याग कर ब्रह्म की ज्योत में लीन हो गए। 'महाराज श्री' के पार्थिव शरीर को तीर्थ नगरी हरिद्वार में 'जल समाधि' प्रदान की गई।
- ऐसे मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के पावन 'श्री चरणों' में शत-शत नमन... कोटि-कोटि वन्दन.
प्रेम प्रकाशी संत श्री मोहनलाल (संत मोनूराम जी)
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

स्वामी शान्तिप्रकाश महान आ

स्वामी शान्तिप्रकाश महान आ

जुणु धरितीअ ते भगवान आ

1. मिठड़ी जिनजी वाणी हुयड़ी,
ज्ञान भरी समझाणी हुयड़ी,
कंदा पूर्ण सभ जा काम हा
2. सभ कहिं दिलि खेप्यारु डिनो,
आए वये खे सत्कारु डिनो,
से त गुणनि अंदर गुणवान हा
3. सतगुरु टेऊराम जनि शरणि वठी,
राम सच्चे वया रंग रची,
सदा हृदय सां निष्काम हा
4. सदा जोगिनि वारी जुगती हुई,
पूर्ण तनि हरि भक्ती हुई,
कंदा भजन सुबह ऐं शाम हा
-संत हरिओमलाल,
प्रेम प्रकाश आश्रम, ग्वालियर

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेष

आये श्याम आये (सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज)

तर्ज : तुम्हीं मेरे मंदिर तुम्हीं मेरी पूजा

स्थाई : दिवस है सुहाना घड़ी है सुहानी।

आये श्याम आए आये श्याम आए

1. यशोदा के घर में भयी भीड़ भारी,
सभी दे बधाई नर और नारी,
कोई दे मिठाई मक्खन कोई लाये।।
2. झूलना में झूले नंद का दुलारा,
सभी देख हर्ष उमंग है अपारा,
यशोदा के मन में खुशी ना समाए।।
3. सुन्दर श्याम मूरत बनी है निराली,
सभी देख मोहे मोहन की लाली,
देख रूप राशी चन्दा भी लजाए।।
4. सभी बृजवासी खुशियाँ मनाएँ,
ठोक ताल अपने नाचे और गाएँ,
इसी मौज मस्ती में हरी गीत गाए।।
आये श्याम आये आये....

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

प्रतिदिन प्रातः काल को उठकर भगवान के आभार मानें कि उसने आपको आज नया जन्म दिया है। मन में संकल्प करें कि आज कोई भी पाप-कर्म नहीं करूँगा और शुभ कर्म ही करूँगा।



सद्गुरु श्री १००८ स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा रचित आध्यात्मिक वाणी में सावन मास की महिमा

सुन्दर सावन मास, सफल कर सारा

मानव जीवन को सफल बनाने वाला भक्ति, दया और सद्गुरु कृपा का संदेश-भारतीय संत साहित्य में ऋतुओं का वर्णन केवल प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए नहीं किया गया, बल्कि उन्हें आध्यात्मिक जीवन के प्रतीकों के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। सावन की वर्षा, हरियाली, शीतलता और नवीनता को संतों ने मानव जीवन में ईश्वर की कृपा, सद्गुरु टेऊराम जी के उपदेश और भक्ति के जागरण का प्रतीक माना है। संतों की वाणी राग सारंग का यह भजन

“सुन्दर सावन मास, सफल कर सारा”

इसी महान आध्यात्मिक परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है। यह भजन मनुष्य को स्मरण कराता है कि जैसे किसान सावन का पूरा लाभ उठाकर अपने खेतों को हरा-भरा करता है, वैसे ही मनुष्य को भी अपने अमूल्य जीवन का सदुपयोग करके प्रेम, दया, धर्म और भक्ति के बीज बोने चाहिए।

सुन्दर सावन मास, सफल कर सारा

मानुष तन यह सावन आया, पुण्य प्रतापे तूने पाया !

व्यर्थ खोवे न तास !!

इन पंक्तियों में मानव जन्म की महिमा का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन किया गया है। संतों के अनुसार चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद मनुष्य को यह दुर्लभ शरीर प्राप्त होता है। यह शरीर केवल भोग-विलास के लिए नहीं, बल्कि आत्मोन्नति और परमात्मा की प्राप्ति के लिए मिला है ! इसलिए संत चेतावनी देते हैं कि जीवन को व्यर्थ मत गँवाओ। जैसे सावन बीत जाने के बाद खेतों में बुवाई नहीं हो सकती, वैसे ही जीवन निकल जाने पर साधना का अवसर समाप्त हो जाता है।

भारतीय शास्त्रों में कहा गया है-

“दुर्लभं मानुषं जन्म”

अर्थात् मनुष्य जन्म अत्यंत दुर्लभ है। यही संदेश इस भजन का भी मूल आधार है। यह जीवन परमात्मा का उपहार है, जिसे सार्थक बनाना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। संतों ने आगे बताया -

दया धर्म का जल बरसाये, ब्रह्मज्ञान की गर्जन लाये !

देवो छाया वास !!

यहाँ संत टेऊराम जी ने वर्षा के जल को दया और धर्म का प्रतीक बनाया है। जैसे वर्षा का जल पृथ्वी को जीवन देता है,

वैसे ही दया और धर्म मानव समाज को जीवित रखते हैं। यदि मनुष्य के भीतर करुणा नहीं है, तो उसका ज्ञान भी अधूरा है। धर्म केवल पूजा-पाठ का नाम नहीं, बल्कि सत्य, प्रेम, सेवा, सहिष्णुता और परोपकार का आचरण है।

“ब्रह्मज्ञान की गर्जन” का अर्थ है-ऐसा ज्ञान जो मनुष्य के भीतर सोई हुई चेतना को जगा दे। बादल की गर्जना जैसे सोए हुए जीवों को जगा देती है, उसी प्रकार सद्गुरु का ज्ञान मनुष्य को अज्ञान, मोह और अहंकार की निद्रा से जगाता है। “देवो छाया वास” का तात्पर्य है कि सद्गुणों से युक्त जीवन ही देवतुल्य जीवन है, जहाँ शांति, सुरक्षा और आनंद का निवास होता है। सद्गुरु की वाणी भजन में आगे अत्यंत सुंदर शिक्षा दी गई है-

प्रेम भक्ति के जल को अचे, बुद्धि भूमि में तांको संचे !

हरा करे गुण घास !!

यहाँ मानव बुद्धि को खेत की भूमि कहा गया है। यदि खेत में उत्तम बीज बोकर समय पर सिंचाई की जाए, तो वह लहलहाती फसल देता है। उसी प्रकार यदि मनुष्य की बुद्धि में प्रेम और भक्ति का जल निरंतर पड़ता रहे, तो उसके भीतर सत्य, क्षमा, विनम्रता, करुणा, सेवा और संयम जैसे गुण विकसित होते हैं।

आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है, परंतु केवल बौद्धिक प्रगति पर्याप्त नहीं है। यदि बुद्धि के साथ प्रेम और संवेदना न हो, तो वही बुद्धि विनाश का कारण भी बन सकती है। इसलिए संत टेऊराम जी पहले बुद्धि की शुद्धि और फिर जीवन की समृद्धि का मार्ग बताते हैं।

वाणी भजन का अंतिम संदेश अत्यंत प्रेरणादायक है-

सावन को जिस सफला किया

कहे टेऊं तिस पाया पिया, मेटे जन्म का त्रास !!

यहाँ “सावन” केवल ऋतु नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव जीवन का प्रतीक है। जिसने अपने जीवन को दया, धर्म, प्रेम, भक्ति और ब्रह्मज्ञान से भर दिया, वही वास्तव में सफल हुआ। ऐसा व्यक्ति जन्म-मरण के भय से मुक्त होकर परम शांति प्राप्त करता है।

सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन इसी संदेश का जीवंत उदाहरण था। उन्होंने मानव सेवा को ईश्वर

**सद्गुरु हरिनासराम
वचनावली**

मरता तो शरीर है आत्मा नहीं। वह तो स्वयं ज्ञान स्वरूप है।



सेवा माना, जाति-पात के भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास किया, प्रेम और सद्भाव का प्रचार किया तथा समाज में नैतिक और आध्यात्मिक जागरण का कार्य किया। उनका मानना था कि धर्म का वास्तविक स्वरूप मानवता है। जो मनुष्य दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझता है, वही सच्चा धार्मिक है।

यह भजन केवल व्यक्तिगत साधना की प्रेरणा नहीं देता, बल्कि सामाजिक जीवन के लिए भी दिशा प्रदान करता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में दया, सेवा, सत्य और प्रेम को अपनाए, तो समाज में हिंसा, घृणा, ईर्ष्या और विभाजन स्वतः समाप्त हो सकते हैं। इसलिए यह भजन आज के समय में और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

सावन की हरियाली कुछ महीनों तक रहती है, परंतु भक्ति की हरियाली जीवनभर रहती है। बाहरी वर्षा केवल धरती को सींचती है, जबकि सद्गुरु की कृपा की वर्षा आत्मा को सींचती है। बाहरी जल अन्न उत्पन्न करता है, परंतु प्रेम और भक्ति का जल सद्गुणों की फसल उगाता है। यही इस भजन का केंद्रीय दर्शन है।

यह भजन हमें समय का महत्व भी सिखाता है। जीवन क्षणभंगुर है। जो आज करना है, उसे कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। सद्गुरु की वाणी सुनना, सत्संग करना, सेवा करना, माता-पिता का सम्मान करना, समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाना तथा परमात्मा का स्मरण करना—यही मानव जीवन की वास्तविक उपलब्धियाँ हैं।

भारतीय संस्कृति में सावन उत्सव, भक्ति और नवजीवन का प्रतीक है। इस ऋतु में प्रकृति हमें सिखाती है कि सूखी डालियाँ भी फिर से हरी हो सकती हैं। उसी प्रकार यदि मनुष्य अपने जीवन में सद्गुरु के उपदेशों को अपनाए, तो उसका जीवन भी नए उत्साह, नई चेतना, नई ऊर्जा और नई दिशा से भर सकता है !!

“सुन्दर सावन मास, सफल कर सारा”

केवल एक ऋतु-गीत नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव जीवन का आध्यात्मिक घोष है। संतो की वाणी भजन हमें बताती है कि मनुष्य जीवन परमात्मा की अमूल्य देन है। इसे दया, धर्म, प्रेम, भक्ति, सेवा और ब्रह्मज्ञान से सींचकर ही सार्थक बनाया जा सकता है। जो व्यक्ति अपने जीवन-रूपी सावन का सदुपयोग करता है, वही सच्चे अर्थों में सफल होता है और जन्म-मरण के भय से मुक्त होकर परम शांति को प्राप्त करता है।

सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज का यह संदेश आज भी

उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके समय में था। यदि हम उनके उपदेशों को अपने जीवन में उतारें, तो हमारा व्यक्तिगत जीवन, परिवार, समाज और राष्ट्र-सभी प्रेम, सद्भाव, नैतिकता और आध्यात्मिक समृद्धि से परिपूर्ण हो सकते हैं। यही इस भजन का शाश्वत संदेश है।

—XX—

रिम झिम कर हरबार, बादल बरसे

प्रकृति, परमात्मा और आध्यात्मिक वर्षा का दिव्य संदेश— भारतीय संत परम्परा में प्रकृति को केवल भौतिक जगत का स्वरूप नहीं माना गया, बल्कि उसे परमात्मा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति के रूप में देखा गया है। ऋषियों ने सूर्य में तेज, चन्द्रमा में शीतलता, वायु में प्राण, अग्नि में शक्ति और वर्षा में ईश्वर की करुणा का दर्शन किया है। प्रस्तुत राग सारंग का यह भजन— **रिम झिम कर हरबार, बादल बरसे**— केवल सावन ऋतु का वर्णन नहीं करता, बल्कि यह मनुष्य के अंतःकरण में होने वाली आध्यात्मिक वर्षा का अत्यंत सुंदर प्रतीक है। इसमें वर्षा के प्रत्येक दृश्य के माध्यम से मानव जीवन के आध्यात्मिक रहस्यों को सरल भाषा में व्यक्त किया गया है।

भजन का प्रारम्भ अत्यंत मनोहारी चित्रण से होता है—

रिम झिम कर हरबार, बादल बरसे ।

बादल बन कर बरसण आया,

आज सखी मम भवन सहाया, बिजली कर चमकार !!

यहाँ वर्षा का बादल ईश्वर की कृपा का प्रतीक है। जैसे तपती हुई धरती वर्षा की प्रतीक्षा करती है, वैसे ही संसार का जीव परमात्मा की कृपा का प्यासा रहता है। जब सद्गुरु की कृपा का मेघ उमड़ता है, तब जीवन की सूखी भूमि पर भक्ति, प्रेम और ज्ञान की वर्षा होने लगती है। बिजली का चमकना आत्मज्ञान की उस ज्योति का प्रतीक है, जो अज्ञान के अंधकार को पलभर में दूर कर देती है।

भजन में प्रकृति का अद्भुत सौन्दर्य वर्णित है—

चौदिश होई अति हरियाली

अवनि भई अद्भुत उजियाली, चमन खिली गुलजार !!

यह हरियाली केवल खेतों की नहीं, बल्कि मानव हृदय की हरियाली है। जब मन में प्रेम, करुणा और सेवा का संचार होता है, तब जीवन आनंद से भर उठता है। जिस प्रकार वर्षा के बाद सूखे वृक्षों में नई कोपलें फूट पड़ती हैं, उसी प्रकार गुरु-कृपा मिलने पर मनुष्य के भीतर सुप्त सद्गुण जागृत हो जाते हैं। उसका जीवन सुगंधित उपवन बन जाता है। भक्ति की

सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश

अपने गुरु पर हजारों बार बलिहार जाऊँ जिसने मुझे पशु से मनुष्य,
मनुष्य से देवता और देवता से भगवान बना दिया ।



सुगंध आनी प्रारंभ हो जाती है !

अगली पंक्तियाँ प्रकृति के संगीत का अत्यंत रमणीय वर्णन करती हैं-

**बुलबुल पपीहा नाचत मोरा, कोयल मैना गूँजत भौरा
मधुर करे झंकार !!**

यह दृश्य केवल प्राकृतिक उल्लास का नहीं, बल्कि आत्मानंद का प्रतीक है। जब हृदय में परमात्मा का प्रेम जागता है, तब प्रत्येक इन्द्रिय, प्रत्येक विचार और प्रत्येक कर्म मधुर संगीत बन जाता है। मनुष्य के भीतर का तनाव समाप्त होकर जीवन उत्सव बन जाता है। भारतीय दर्शन में इसे 'आनन्द' कहा गया है, जो आत्मा का स्वाभाविक गुण है। अलौकिक आनन्दानुभूति होती है, जिसे अंदर महसूस किया जा सकता है,

भजन की अंतिम पंक्तियाँ वर्षा की पूर्णता का चित्र प्रस्तुत करती हैं-

**सरवर नदियाँ नाला भरिया,
कहे 'टेऊँ' सब कारज सरिया, होई जय जयकार !!**

जब वर्षा भरपूर होती है तो तालाब, नदी और नाले सभी भर जाते हैं। उसी प्रकार जब मनुष्य के भीतर सद्गुरु की कृपा बरसती है, तब उसका जीवन भी सभी दैवीय संपदा के गुणों से परिपूर्ण हो जाता है। उसके अधूरे कार्य पूर्ण होने लगते हैं, उसका जीवन सफल बन जाता है और अंततः समाज में उसकी यश कीर्ति फैलती है।

इस भजन का आध्यात्मिक संदेश अत्यंत गहरा है। यहाँ बादल सद्गुरु हैं, वर्षा उनकी कृपा है, बिजली आत्मज्ञान है, हरियाली भक्ति है, फूल सद्गुण हैं, पक्षियों का संगीत आत्मानंद है और भरे हुए सरोवर पूर्ण जीवन के प्रतीक हैं। यह सम्पूर्ण भजन प्रतीकों की ऐसी माला है जो साधक को आत्मचिन्तन की ओर प्रेरित करती है।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपने जीवन में सदैव यही संदेश दिया कि मनुष्य का वास्तविक सौन्दर्य बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि अपने भीतर चरित्र, सेवा, प्रेम और भक्ति में है। उन्होंने समाज में जाति, धर्म और ऊँच-नीच के भेदभाव को मिटाकर मानवता की हरियाली फैलाने का प्रयास किया। जिस प्रकार वर्षा सभी पर समान रूप से होती है, उसी प्रकार सद्गुरु का प्रेम भी बिना किसी भेदभाव के सबके लिए समान होता है।

वर्षा का जल केवल धरती को ही नहीं, बल्कि वातावरण

को भी शुद्ध करता है। उसी प्रकार आध्यात्मिक जीवन मनुष्य के विचारों, व्यवहार और समाज को भी शुद्ध करता है। यदि मनुष्य अपने जीवन में दया, सत्य, सेवा और प्रेम को अपनाए, तो उसका परिवार, समाज और राष्ट्र भी सुख-समृद्धि से भर सकता है। यही इस भजन का सामाजिक संदेश भी है।

भारतीय संस्कृति में सावन को भक्ति का महीना माना गया है। इस समय प्रकृति स्वयं ईश्वर की आराधना करती हुई प्रतीत होती है। पर्वत, वृक्ष, नदियाँ, पशु-पक्षी-सभी आनंद का अनुभव करते हैं। संत कवियों ने इस ऋतु को आत्मा और परमात्मा के मिलन का समय बताया है। यह भजन भी उसी दिव्य अनुभूति को अत्यंत सरल और मधुर शब्दों में प्रस्तुत करता है।

आज का मनुष्य भौतिक प्रगति के बावजूद मानसिक अशान्ति, तनाव और अकेलेपन से जूझ रहा है। उसका मन सूखी धरती की भाँति बन गया है। ऐसे समय में यह सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित आध्यात्मिक वाणी का भजन हमें स्मरण कराता है कि वास्तविक सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि ईश्वर की कृपा, सद्गुरु के मार्गदर्शन और प्रेमपूर्ण जीवन में है। जब हृदय में भक्ति की वर्षा होती है, तब जीवन की सारी वीरानी समाप्त हो खिल उठता है ! संतो की वाणी भजन पर्यावरण संरक्षण का भी अप्रत्यक्ष संदेश देती है। जिस प्रकृति को संतों ने ईश्वर का स्वरूप माना, उसकी रक्षा करना भी हमारा धर्म है। वृक्ष, जल, नदियाँ और जीव-जंतु सभी उसी परम सत्ता की सृष्टि हैं। इसलिए प्रकृति का सम्मान करना आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न अंग है।

रिम झिम कर हरबार, बादल बरसे

केवल वर्षा ऋतु का गीत, भजन नहीं, बल्कि आत्मा पर बरसने वाली ईश्वरीय कृपा का अमर गान है। यह हमें सिखाता है कि जब सद्गुरु की कृपा का मेघ बरसता है, तब मन की बंजर भूमि प्रेम, भक्ति, ज्ञान और सेवा की हरियाली से भर जाती है। तब जीवन के सभी कार्य सफल होते हैं और मनुष्य का अस्तित्व स्वयं ईश्वर की महिमा का जयघोष बन जाता है।

यही इस भजन का शाश्वत संदेश है- अपने हृदय को ऐसा उपजाऊ बनाइए कि उस पर सद्गुरु की कृपा की वर्षा होते ही जीवन परम आनंद प्राप्त कर मानव तन सफल बन जाए, जिससे हृदय रूपी आंगन लोकमंगल का उद्यान बन जाए !

प्रेमप्रकाशी संत मोहनलाल जी महाराज
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

उदारता का गुण मन पर है, धन पर नहीं,
बड़प्पन का गुण बुद्धि पर है, आयु पर नहीं ।



रक्षा बन्धन क्यों.....

माता लक्ष्मी जी ने सर्वप्रथम राजा बलि को राखी बाँधी थी। ये बात तब की है- जब दानवेन्द्र राजा बलि अश्वमेध यज्ञ करा रहे थे। यह देखकर भगवान नारायण ने राजा बलि को छलने के लिये वामन अवतार लिया और तीन पग में सब कुछ ले लिया और उसे भगवान ने पाताल लोक का राज्य रहने के लिये दे दिया।

इस पर उसने प्रभु से कहा की कोई बात नहीं- मैं रहने के लिये तैयार हूँ- पर मेरी भी एक शर्त माननी होगी।

भगवान अपने भक्तों की बात कभी टाल नहीं सकते। तब बलि ने कहा ऐसे नहीं प्रभु! आप छलिया हो! पहले मुझे वचन दो.... जो माँगूंगा वो आप देंगे....

श्रीहरि नारायण ने वचन देकर एवं मुस्कराते हुए कहा- हाँ। अवश्य देंगे।

जब श्रीहरि को वचनबद्ध करा लिया- तब बलि बोले- मैं जब सोने जाऊँ और जब उठूँ तो जिधर भी नजर जाये उधर आपको ही देखूँ! सभी जगह आपके ही दर्शन होना चाहिए।

भगवान श्री नारायण उसकी माँग पर मन-ही-मन मुस्करा उठे और बोले इसने तो मुझे पहरेदार बना दिया है.... ये सब कुछ हार कर भी जीत गया है पर कर भी क्या सकते थे, वचन जो दे चुके थे। पाताल में रहते-रहते काफी समय बीत गया।

उधर वैकुण्ठ में माँ लक्ष्मी जी को भगवान श्रीनारायण के बिना चिंता होने लगी। तब वहाँ नारद जी का आना हुआ। लक्ष्मी जी ने कहा- नारद जी, आप तो तीनों लोकों में भ्रमण करते हो क्या प्रभु श्रीनारायण को कहीं देखा आपने? यह सुनकर महर्षि नारद जी बोले कि पाताल लोक में हैं प्रभु। वे राजा बलि के पहरेदार बने हुये हैं! इस पर माँ लक्ष्मी जी ने नारद जी से कहा- अब आप ही मुझे राह दिखायें कि श्रीहरि यहाँ पर कैसे आवें? तब नारद ने कहा आप राजा बलि को अपना भाई बना लो और रक्षा का वचन लो और पहले वचन ले लेना- दक्षिणा में जो माँगेंगी वह देना होगा और दक्षिणा में आप अपने नारायण भगवान को माँग लेना।

युक्ति पाकर माता लक्ष्मी जी सुन्दर स्त्री के भेष में रोते हुए राजा बलि के यहाँ पाताललोक पहुँची। बलि ने कहा- बहन, आप क्यों रो रही हैं? लक्ष्मी जी बोली- कि मेरा कोई भाई नहीं है इसलिए मैं दुःखी हूँ। यह सुनकर बलि बोले- तुम मेरी धर्म की बहिन बन जाओ.... तब राजा बलि को अपना भाई बनाकर माँ लक्ष्मी जी ने सर्वप्रथम राखी पहनाई। इस पर माता लक्ष्मी ने बलि से पहले वचन लिया और बोली भेंट में मुझे आपका ये पहरेदार चाहिये। जब ये माँगा तो बलि ने सोचा धन्य हो माता! पति आये सब कुछ ले गये और ये महारानी ऐसी आर्यी कि उन्हे भी लें गयीं। कहा जाता है तब से ही ये 'रक्षाबन्धन' की पर्व परम्परा शुरू हुई और इसी लिये जब कलावा बाँधते समय मंत्र बोला जाता है-

'॥ येन बद्धो बलि राजा- दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वाम प्रतिबद्धनामि, रक्षे मा चल माचलः ॥'

जिस रक्षासूत्र से महान् शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को बाँधा गया था, उसी रक्षा बंधन से मैं तुम्हें बाँधता हूँ। जो सदैव तुम्हारी रक्षा करेगा।

भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को कायम रहने हेतु ये रक्षा बन्धन का पावन पर्व मनाया जाता है। जिससे भाई अपनी बहन की सदैव दुःख-सुख में रक्षा कर सके।



रोचक आख्यान

कान्हा और कुम्हार

प्रभु श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ बहुत-सी लीला की है. श्रीकृष्ण गोपियों की मटकी फोड़ते और माखन चुराते और गोपियाँ श्रीकृष्ण का उलाहना लेकर यशोदा मैया के पास जातीं. ऐसा बहुत बार हुआ.

जब यशोदा मैया श्रीकृष्ण की शिकायतों से तंग आ गई तो एक बार छड़ी लेकर श्रीकृष्ण की ओर दौड़ी. जब प्रभु ने अपनी मैया को क्रोध में देखा तो वह अपना बचाव करने के लिए भागने लगे.

भागते-भागते श्रीकृष्ण एक कुम्हार के पास पहुँचे. कुम्हार तो अपने मिट्टी के घड़े बनाने में व्यस्त था. लेकिन जैसे ही उसने कान्हा को देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ. कुम्हार जानता था कि बालकृष्ण साक्षात् परमेश्वरीय अवतार हैं. तब प्रभु ने कुम्हार से कहा कि कुम्हार जी, आज मेरी मैया मुझ पर बहुत क्रोधित है, मैया छड़ी लेकर मेरे पीछे आ रही है. मैया, मुझे कहीं छुपा लो.

यह सुनकर कुम्हार ने श्रीकृष्ण को एक बड़े मटके के नीचे छिपा दिया. कुछ ही क्षणों में मैया यशोदा भी वहाँ आ गई और कुम्हार से पूछने लगी-

क्यूँ रे कुम्हार! तूने मेरे कन्हैया को कहीं देखा है क्या?

कुम्हार ने कह दिया- नहीं, मैया! मैंने कन्हैया को नहीं देखा. श्रीकृष्ण यह सब बातें बड़े से घड़े के नीचे छुपकर सुन रहे थे. मैया तो वहाँ से चली गयीं.

अब प्रभु श्रीकृष्ण कुम्हार से कहते हैं- कुम्हार जी, यदि मैया चली गई हो तो मुझे इस घड़े से बाहर निकालो.

कुम्हार बोला- ऐसे नहीं प्रभु जी! पहले मुझे चौरासी लाख योनियों के बंधनसे मुक्त करने का वचन दो.

भगवान मुस्कराये और कहा- ठीक है, मैं तुम्हें चौरासी लाख योनियों से मुक्त करने का वचन देता हूँ. अब तो मुझे बाहर निकालो.

कुम्हार कहने लगा- मुझे अकेले नहीं प्रभु जी! मेरे परिवार के सभी लोगों को भी चौरासी लाख योनियों के बंधन से मुक्त करने का वचन दोगे तभी मैं आपको इस घड़े से बाहर निकालूँगा.

प्रभु कहते हैं- चलो ठीक है, उनको भी चौरासी के बन्धन से मुक्त होने का मैं वचन देता हूँ. अब तो मुझे घड़े से बाहर निकालो.

अब कुम्हार कहता है- बस, मेरे प्रभु! एक विनती और है, उसे भी पूरा करने का वचन दे दो तो मैं आपको घड़े से बाहर निकाल दूँगा.

भगवान बोले- वह भी बता दो, क्या चाहते हो?

कुम्हार कहने लगा- हे प्रभु! जिस घड़े के नीचे आप छुपे हो, उसकी मिट्टी मेरे बैलों के ऊपर लाद के लायी गई है. अतः मेरे इन बैलों को भी चौरासी बंधन से मुक्त कर दीजियेगा.

भगवान ने कुम्हार के प्रेम पर प्रसन्न होकर उनके लिए भी चौरासी के बंधन से मुक्ति का वचन दिया

श्रीहरि बोले- अब तो तुम्हारी सब इच्छाएँ पूरी हो गई, अब तो बाहर निकालो इस घड़े से. तब कुम्हार कहत है- अभी नहीं, भगवन्! बस, एक अंतिम इच्छा और है. उसे भी पूरा कर दीजिए और वह यह है- जो भी प्राणी हम दोनों के इस संवाद को सुनेगा, उसे भी आप चौरासी लाख योनियों के भटकन से मुक्त कर दोगे. बस, यह वचन दे दो तो मैं आपको घड़े से बाहर निकालता हूँ.

मिट्टी को आकार देने वाले कुम्हार की प्रेम भरी बातों को सुनकर जगत के रचनाकार प्रभु श्रीकृष्ण बहुत खुश हुए और उसकी इस इच्छा को भी पूरा करने का वचन दिया. फिर कुम्हार ने बालक रूप श्रीकृष्ण को घड़े से बाहर निकाल दिया और उनके श्रीचरणों में साष्टांग प्रणाम किया. प्रभुजी के चरण धोकर चरणामृत लिया एवं अपनी पूरी झोपड़ी में चरणामृत का छिड़काव किया. अंत में प्रभु जी के गले लगकर इतना रोये कि उनकी लीला में ही विलीन हो गए.

यहाँ पर जरा सोचें, जो बाल श्रीकृष्ण सात कोस लम्बे-चौड़े गोवर्धन पर्वत को अपनी अँगुली पर उठा सकते

**सद्गुरु हरिदासराम
वचनावली**

**‘मिले पद निर्वाण’ न हिलना, न डुलना, न बोलना-अर्थ बहुत होते हैं।
पर निर्वाण पद का प्रधान अर्थ होता है- शान्त हो जाना।**



हैं, तो क्या वो एक घड़ा नहीं उठा सकते थे. लेकिन बिना प्रेम रीझे नहीं नटवर नन्द किशोर। कोई कितने भी यज्ञ करे, अनुष्ठान करे, कितना भी दान करे, चाहे कितनी भी भक्ति करे, लेकिन जब तक मन में प्राणी मात्र के लिए प्रेम नहीं होगा, प्रभु श्रीकृष्ण नहीं मिल सकते.

भगवान श्रीकृष्ण बने शिकार

एक बार की बात है. एक संत जंगल में कुटिया बनाकर रहते थे और भगवान श्रीकृष्ण का भजन करते थे. संत को अटूट विश्वास था कि एक-ना-एक दिन मेरे भगवान श्रीकृष्ण मुझे साक्षात् दर्शन जरूर देंगे.

उसी जंगल में एक शिकारी आया. उस शिकारी ने जब इस भयानक जंगल में कुटिया देखी. कौतूहलवश वह कुटिया में गया और वहाँ पर संत को देखकर उनको प्रणाम किया और उनसे पूछा कि आप कौन हैं और इस बियाबान जंगल में यहाँ पर क्या कर रहे हैं?

संत ने सोचा यदि मैं इससे कहूँगा कि भगवान श्रीकृष्ण के इंतजार में बैठा हूँ कि उनका दर्शन मुझे किसी प्रकार से हो जाय तो शायद ये बात इसको समझ में नहीं आएगी. संत ने दूसरा उपाय सोचा. संत ने किरात से पूछा- भैया! पहले आप बताओ कि आप कौन हैं और इस जंगल में किसलिए आये हो?

उस किरात (शिकारी) ने कहा कि मैं एक शिकारी हूँ और अपने शिकार के लिए आया हूँ.

संत ने तुरंत उसी की भाषा में कहा कि मैं भी एक शिकारी हूँ और अपने शिकार के लिए यहाँ पर आया हूँ.

शिकारी ने पूछा- अच्छा संत जी, आप ये बताइये आपका शिकार दिखता कैसे है? आपके शिकार का नाम क्या है? हो सकता है कि मैं आपकी मदद कर दूँ.

संत ने सोचा इसे कैसे बताऊँ, फिर भी संत ने शिकारी को बोला- मेरे शिकार का नाम है..... वो दिखने में बहुत ही सुंदर है, साँवला सलोना है, उसके सिर पर मोर मुकुट है, हाथों में बंसी है. ऐसा बोलकर संतजी रोने लगे.

किरात बोला- बाबा! रोते क्यों हो? मैं आपके शिकार को जब तक ना पकड़ लूँ, तब तक पानी भी नहीं पियूँगा और आपके पास भी नहीं आऊँगा.

अब वह शिकारी घने जंगल के अंदर गया और जाल बिछा कर एक पेड़ पर बैठ गया. यहाँ पर इंतजार करने लगा. भूखा-प्यासा बैठा हुआ है. एक दिन बीता, दूसरा दिन बीता और फिर तीसरा दिन. उसे नींद भी आने लगी. बाँकेबिहारी को उसके भोले भाव पर दया आ गई और भगवान उसके भाव पर रीझ गए. भगवान मंद-मंद स्वर से बाँसुरी बजाते आये और उसके जाल में स्वयं फँस गए. जैसे ही किरात को फँसे हुए शिकार का अनुभव हुआ तो तुरंत नींद से उठा और उस साँवरे भगवान को देखा.

जैसा संत ने बताया था उनका रूप हूबहू वैसा ही था. वह खुश होकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा, मिल गया, मिल गया, शिकार मिल गया. शिकारी ने उस शिकार को जाल समेत कंधे पर बिठा लिया और शिकारी कहता हुआ जा रहा है- आज तीन दिन के बाद मिले हो, भूखा-प्यासा रखा. अब तुम्हें मैं छोड़ने वाला नहीं हूँ.

शिकारी तेजचाल से कुटिया की ओर बढ़ रहा था. जैसे ही संत की कुटिया के समीप पहुँचा तो शिकारी ने आवाज लगाई- बाबा, बाबा!

संत ने तुरंत दरवाजा खोला और यह क्या.... संत उस किरात के कंधे पर भगवान श्रीकृष्ण को जाल में फँसा देख रहे हैं. भगवान श्रीकृष्ण जाल में फँसे हुए मंद-मंद मुस्करा रहे हैं.

किरात ने कहा- आपका शिकार लाया हूँ, बड़ी मुश्किल से मिले हैं.

संत के होश उड़े हुए थे. संत प्रभु के चरणों में गिर पड़े और फूट-फूट कर रोने लगे. संत कहते हैं- मैंने आज तक आपको पाने के लिए अनेक प्रयास किये प्रभु लेकिन आज आप मुझे इस किरात के कारण मिले हो.

भगवान बोले- इस शिकारी का प्रेम तुमसे ज्यादा है. इसका भाव तुम्हारे भाव से श्रेष्ठ है. इसका विश्वास तुम्हारे विश्वास से भी अधिक है. आज जब तीन दिन से इसको बिना खाये-पिये मेरी प्रतीक्षा में देखा तो मुझसे रहा नहीं गया और उसके जाल में आ गया. मैं तो वैसे भी भक्तों के अधीन ही हूँ- और आपकी भक्ति भी कम नहीं है संत जैसी. आपके दर्शनों की प्रबल इच्छा से मैं इसे तीन ही दिन में प्राप्त हो गया. इस तरह से भगवान दर्शन देकर अर्न्तधान हो गए.

संकलित



सत्वी निष्ठा का फल

श्री गणेश जयंती
14 सितम्बर विशेष

प्राचीन काल की बात है. सिन्धु देश की पल्ली नगरी में कल्याण नाम का एक धनी सेठ रहता था. उसकी पत्नी

का नाम इन्दुमती था. विवाह होने के बहुत दिनों के पश्चात् उनके पुत्र हुआ. उसके जन्मोत्सव में उन लोगों ने अनेक दान-पुण्य किये, राग-रंग और आमोद-प्रमोद में पर्याप्त धन व्यय किया. उस पुत्र का नाम रखा गया 'बल्लाल', वह उन दोनों के नयनों का तारा था.

'कितना मनोरम वन है.' सरोवर में अपने समवयस्क बालकों के साथ स्नान करते हुए बल्लाल ने अपने कथन का समर्थन कराना चाहा. वह उन्हें नित्य अपने साथ लेकर पल्ली से थोड़ी दूर स्थित वन में आकर सैर-सपाटा किया करता था. बालकों ने उसकी हाँ-में-हाँ मिलायी.

'चलो, हम लोग भगवान् विघ्नेश्वर श्रीगणेश देवता की पूजा करें, उनकी कृपा से समस्त संकट मिट जाते हैं.' बल्लाल ने सरोवर के किनारे एक छोटे-से पत्थर को श्रीगणेश का श्रीविग्रह मानकर बालकों को पूजा करने की प्रेरणा दी. उसने श्रीगणेश-महिमा के सम्बन्ध में अनेक बातें घर पर सुनी थीं.

लता-पत्र एकत्र कर बालकों ने एक मण्डप बना लिया, उसमें तथाकथित श्रीगणेश-विग्रह की स्थापना करके मानसिक पूजा- फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, ताम्बूल, दक्षिणा आदि से आरम्भ की. उनमें से कई एक पण्डितों का स्वाँग बनाकर पुराणों और शास्त्रों की चर्चा करने लगे. इस प्रकार श्रीगणेश की उपासना में उनका मन लग गया. वे दोपहर को भोजन करने घर नहीं आते थे, इसलिये दुबले हो गये. उनके पिताओं ने कल्याण सेठ से कहा कि यदि बल्लाल का वन में जाना नहीं रोका गया तो हम लोग राजा से शिकायत करके आपको पल्लीनगरी से बाहर निकलवा देंगे. कल्याण का मन चिन्तित हो उठा.

+ + + +



'ये तो नकली गणेश है, बच्चों! असली गणेश तो हृदय में रहते हैं.' कल्याण ने डंडे से बल्लाल को सावधान किया.

'पिताजी! आप जो कुछ भी कह रहे हैं, वह आपकी दृष्टि में सत्य है, पर मेरी निष्ठा तो श्रीगणेश के इसी श्रीविग्रह में है. मैं पूजा नहीं छोड़ सकता.' बल्लाल का इतना कहना था कि सेठ ने उसे मारना आरम्भ किया, अन्य बालक भाग निकले. सेठ ने मण्डप तोड़ डाला और बल्लाल को एक मोटे रस्से से पेड़ के तने में बाँध दिया.

'यदि इस विग्रह में श्रीगणेश होंगे तो तुम्हारा बन्धन खुल जाएगा. इस निर्जन वन में वे ही तुम्हारी रक्षा करेंगे.' ऐसा कहकर कल्याण ने घर का रास्ता लिया.

'निस्संदेह श्रीगणेश ही मेरे माता-पिता हैं. वे दयामय ही हैं. वे विघ्न-विदारक, सिद्धि-दायक, सर्व समर्थ हैं. मैं उनकी शरण में अभय हूँ.' बल्लाल की निष्ठा बोल उठी. वह हृदय में करुणा का वेग समेटकर निर्निमेष नेत्रों से श्रीगणेश के विग्रह को देखने लगा.

'मेरा तन भले ही बाँधा जाय, पर मेरा मन स्वतन्त्र है. मैं अपना प्राण श्रीगणेश के चरणों में अर्पित करूँगा.' बल्लाल के इस निश्चय से भगवान् श्रीगणेश उस पाषाण से प्रकट हो गये.

'तुम्हारी निष्ठा धन्य है वत्स!' श्रीगणेश ने उसका आलिङ्गन किया. वह बन्धनमुक्त हो गया. उसने अपने आराध्य की खुलकर स्तुति की. श्रीगणेश ने उसे अभय दान दिया और स्वयं अन्तर्धान हो गये.

(गणेशपुराण, अ. २२)

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

अब सारा व्यवहार फैशन का हो गया है। फैशन से देश फना (बर्बाद) हो गया है।



खीर की प्रसादी

बरसाना में श्री रूप गोस्वामी चैतन्य महाप्रभु के छः शिष्यों में से एक थे। एक बार भ्रमण करते-करते अपने चले जीव गोस्वामी जी के यहाँ बरसाना आए। जीव गोस्वामी जी ठहरे फक्कड़ साधू। फक्कड़ साधू को जो मिल जाये वो ही खा लें जो मिल जाये वो ही पी लें। आज उनके गुरु आए तो उनके मन भाव आया की मैं रोज सूखी रोटी, पानी में भिगो कर खा लेता हूँ। मेरे गुरु आये हैं उन्हें क्या खिलाऊँ ?

एक बार अपनी कुटिया में देखा किंचित तीन दिन पुरानी रोटी बिल्कुल कठोर हो चुकी थी। मैं साधू तो पानी में गला-गला खा लूँ। यद्यपि मेरे गुरु साधुता की परम स्थिति को प्राप्त कर चुके हैं फिर भी मेरे मन में आनन्द कैसे हो। कैसे मेरा मन संतुष्ट होगा ! एक क्षण के भक्त के मन में संकल्प आया की अगर समय होता तो किसी बृजवासी के घर चला जाता। दूध मांग लेता, चावल मांग लाता। मेरे गुरु पथारे जो देह के सम्बंध में मेरे चाचा भी लगते हैं। लेकिन भाव साम्राज्य में प्रवेश कराने वाले मेरे गुरु भी तो हैं। उनको खीर ही बनाकर खिला देता !!

रूप गोस्वामी ने आकर कहा जीव भूख लगी है तो जीव गोस्वामी उन सूखी रोटियों को अपने गुरु को दे रहा है। अँधेरा हो रहा है। जीव गोस्वामी की आँखों में अश्रु आ रहे हैं, और रूप गोस्वामी जी ने कहा तू क्यों रो रहा है हम तो साधू हैं ना। जो मिल जाय वही खा लेते हैं। मैं सूखी रोटियाँ भी खा लूँगा !! जीव ने कहा, नहीं बाबा मेरा मन नहीं मान रहा। आप की यदि कोई पूर्व सूचना होती तो जो मेरे मन में वह प्रसादी तैयार कर लेता !!

यह चर्चा हो ही रही थी की कोई अर्द्धरात्रि में दरवाजा खटखटाता है। ज्यों ही दरवाजा खटखटाया गया त्यों ही जीव गोस्वामी जी ने दरवाजा खोला तो देखा, एक किशोरी खड़ी हुई है ८-१० वर्ष की, हाथ में कटोरा है !! किशोरी ने कहा, 'बाबा मेरी माँ ने खीर बनाई है और कहा जाओ बाबा को दे आओ।' जीव गोस्वामी ने उस खीर के कटोरे को ले जाकर रूप गोस्वामी जी के पास रख दिया। बोले, 'बाबा पाओ !! जैसे ही रूप गोस्वामी जी ने उस खीर को स्पर्श किया उनका हाथ काँपने लगा। जब जीव गोस्वामी ने देखा बाबा का हाथ कांप रहा है तो पूछा, 'बाबा कोई अपराध बन गया है !! रूप गोस्वामी जी ने पूछा, 'जीव आधी रात को यह खीर कौन लाया ? बाबा पड़ोस में एक कन्या है मैं जानता हूँ उसे। वो लेकर आई है' जीव गोस्वामी बोले

रूप गोस्वामी बोले, 'नहीं जीव इस खीर को मैंने जैसे ही



राधाष्टमी विशेष

चख के देखा मेरे शरीर में रोमांच हो आया। जीव तू पता कर यह

कन्या मुझे मेरे किशोरी जी के होने अहसास दिला रही है !! नहीं बाबा वह कन्या पास की है, मैं जानता हूँ उसको' जीव ने उत्तर दिया !!

रूप गोस्वामी नहीं माने तो, अर्द्ध रात्रि में दोनों गए उसके घर और दरवाजा खटखटाया। अन्दर से उस कन्या की माँ निकल कर बाहर आई !! जीव गोस्वामी जी ने पूछा, 'आपको कष्ट दिया, परन्तु आपकी लड़की कहाँ है ?' उस महिला ने कहा, क्या

बात हो गई बाबा ? आपकी लड़की है कहाँ ? जीव गोस्वामी ने अपना प्रश्न दोहराया !! वो तो उसके ननिहाल गई है गोवर्धन, १५ दिन हो गए हैं। महिला ने बताया। इतना सुनते ही रूप गोस्वामी जी को मूर्च्छा आ गयी। जीव गोस्वामी जी ने रूप गोस्वामी जी को सहारा दिया और उनके कहने पर उन्हें लेकर श्रीजी के मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। जैसे एक क्षण में चढ़ जायें। लंबे-लंबे पग भरते हुए मन्दिर पहुँचे !! वहाँ जाकर जीव गोस्वामी जी ने गोसाँईजी से पूछा, 'बाबा एक बात बताओ आज क्या भोग लगाया था श्रीजी श्यामा प्यारी को। गोसाँई जी जानते थे श्री जीव गोस्वामी को। बोले, क्या बात हो गई बाबा ?'

जीव गोस्वामी जी ने फिर कहा, 'क्या भोग लगाया था ?'

गोसाँई जी ने कहा, आज श्रीजी को खीर का भोग लगाया था !!

इतना सुनते ही रूप गोस्वामी तो 'श्री राधे श्री राधे' कहने लगे। उन्होंने गोसाँई जी से कहा, 'बाबा एक निवेदन और है आप से, यद्यपि यह मन्दिर की परम्परा के विरुद्ध है कि एक बार जब श्री जी को शयन करा दिया जाये तो उनकी लीला में जाना अपराध है। प्रिया प्रियतम जब विराज रहे हों तो नित्य लीला है उनकी !! अपराध है फिर भी आप एक बार यह बता दीजिये कि, जिस पात्र में भोग लगाया था वह पात्र रखो है के नहीं रखो है ?'

गोसाँई जी मन्दिर के पट खोलते हैं और देखते हैं की वह पात्र नहीं है वहाँ पर !! गोसाँई जी बाहर आते हैं और कहते हैं बाबा वह पात्र नहीं है वहाँ पर ! न जाने का बात है गई है ? रूप गोस्वामी जी ने अपना दुपट्टा हटाया और वह चाँदी का पात्र दिखाया, 'बाबा यह पात्र तो नहीं है ?'

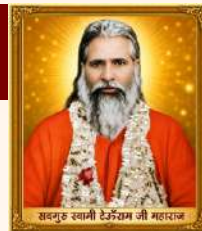
गोसाँई जी ने कहा, 'हाँ बाबा! यही पात्र तो है !!

रूप गोस्वामी जी ने कहा, 'श्री राधारानी ३०० सीढ़ी उतरकर मुझे खीर खिलाने आईं!!', किशोरी पधारी थी!!!, राधारानी आई थी !! उस खीर को उन्होंने मुख पर रगड़ लिया, सब साधु संतो को बांटते हुए 'श्रीराधे श्रीराधे' करते हुये फिर कई वर्षों तक श्री रूप गोस्वामी जी बरसाना में ही रहे !!

संकलित



सद्गुरु साईं टेऊराम चालीसा – भावार्थ सहित



श्लोक- प्रथमे हरिहर ब्रह्म को, बार बार प्रणाम ।
नर तन धर त्रिदेव जो, होया टेऊराम ॥

भावार्थ- चालीसा का आरम्भ ब्रह्मा, विष्णु और महेश को सादर प्रणाम करते हुए किया गया है। कवि श्रद्धापूर्वक यह भाव व्यक्त करते हैं कि यही त्रिदेव मानवता के कल्याण के लिए सद्गुरु टेऊराम जी के रूप में अवतरित हुए। उनका जीवन ईश्वर की करुणा, ज्ञान और धर्म की स्थापना का दिव्य संदेश है।

श्लोक- तप्त धरा मरुदेश में, मेघ देत सन्देश ।

त्यों जग के कल्याण हित, हरि धारै नर भेष ॥

भावार्थ- जिस प्रकार वर्षा के मेघ तपती हुई धरती को शीतलता और नवजीवन प्रदान करते हैं, उसी प्रकार परमात्मा संत रूप धारण कर संसार में प्रेम, सत्य और धर्म का प्रकाश फैलाते हैं। सद्गुरु टेऊराम जी का अवतरण भी मानवता के कल्याण के लिए हुआ।

श्लोक- सिन्ध देश की महिमा भारी,
बार-बार ऋग्वेद उच्चारी ।
सिन्धु तीर पावन प्रसंगा,
बहती जहां ज्ञान की गंगा ॥

भावार्थ- सिन्ध की पावन भूमि प्राचीन काल से धर्म, ज्ञान और संस्कृति का महान केन्द्र रही है। ऋग्वेद में भी इसकी महिमा का वर्णन मिलता है। यह भूमि संतों और महापुरुषों की तपोभूमि के रूप में विख्यात रही है। सिन्धु नदी के तट पर ज्ञान, अध्यात्म और संत परम्परा का दिव्य प्रवाह सदैव बना रहा। इस पवित्र भूमि ने अनेक महापुरुषों को जन्म देकर मानवता को आत्मज्ञान और धर्म का मार्ग प्रदान किया।

श्लोक- ऋषी मुनी अरु ज्ञानी ध्यानी,
पढ़ते जहां ब्रह्म की बानी ।
धन्य सिन्ध की धरती सारी,
धन्य सिन्ध के नर अरु नारी ॥

भावार्थ- यह वह पुण्यभूमि थी जहाँ वेदों और ब्रह्मज्ञान का अध्ययन होता था। ऋषि, मुनि और तपस्वी ध्यान तथा साधना के माध्यम से आत्मकल्याण के साथ समाज का भी मार्गदर्शन करते थे। कवि सिंध प्रदेश के प्रत्येक स्त्री-पुरुष और उसकी पवित्र भूमि को धन्य बताते हैं, क्योंकि इस भूमि ने अनेक संतों,

भक्तों और महापुरुषों को जन्म देकर संसार का कल्याण किया है।

श्लोक- समय बड़ा प्रबल प्रवीना,
वेद पुराण नि वर्णन कीना ।
काल चक्र दुस्तर अति भारा,
आ अधर्म ने पांव पसारा ॥

भावार्थ- वेद और पुराण बताते हैं कि समय का प्रभाव अत्यन्त प्रबल होता है। समय के साथ परिस्थितियाँ बदलती हैं, इसलिए मनुष्य को हर परिस्थिति में धर्म, सत्य और सदाचार का आश्रय नहीं छोड़ना चाहिए। जब संसार में अधर्म, अन्याय और अज्ञान बढ़ने लगता है, तब समाज अशांति और दुःख से भर जाता है। ऐसे समय में परमात्मा संतों के माध्यम से धर्म और सत्य की पुनः स्थापना करते हैं।

श्लोक- धर्म कर्म भूले नर नारी,
पाप कर्म में वृत्ति धारी ।
गीता में श्री कृष्ण सुनाया,
जब जब भार भूमि पर आया ॥

भावार्थ- जब मनुष्य अपने धर्म, कर्तव्य और सदाचार को छोड़कर पाप और स्वार्थ में लिप्त हो जाता है, तब उसका जीवन और समाज दोनों पतन की ओर बढ़ते हैं। सद्गुरु ऐसे समय में मानव को पुनः धर्ममार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। यहाँ भगवान श्रीकृष्ण के उस दिव्य संदेश का स्मरण कराया गया है कि जब पृथ्वी पर अधर्म का भार बढ़ जाता है, तब परमात्मा धर्म की रक्षा और मानवता के कल्याण के लिए अवतरित होते हैं।

श्लोक- तब तब ही अवतार धरूं मैं,
सत्य धर्म की विजय करूं मैं ।
प्रण पालन हित ले अवतारा,
आए खण्डू नगर मंझारा ॥

भावार्थ- भगवान का प्रत्येक अवतार सत्य, धर्म और मानवता की रक्षा के लिए होता है। सद्गुरु टेऊराम जी का अवतरण भी इसी उद्देश्य से हुआ, जिससे संसार में प्रेम, सेवा और ईश्वर-भक्ति का प्रकाश फैल सके। अपने दिव्य संकल्प को पूर्ण करने और लोककल्याण के लिए सद्गुरु टेऊराम जी ने खण्डू

**सद्गुरु हरिदास राम
वचनावली**

जहाँ जन्म है, वहाँ मृत्यु । जहाँ उत्पत्ति है, वहाँ विनाश । मृत्यु का पीछा उसी दिन से हमारे साथ शुरू हो जाता है, जब से हमारा जन्म है । मृत्यु भी कई प्रकार की होती है । रोग भी मृत्यु है, गरीबी भी मृत्यु है और अभिमान भी मृत्यु है ।

सद्गुरु टेऊराम चालीसा



नगर में अवतार धारण किया। उनका आगमन समस्त मानवता के लिए ईश्वरीय कृपा का शुभ संदेश था।

श्लोक- चेलाराम के आंगन माहीं,
खुशी भई सब के मन माहीं ।
कृष्णा मां को दरश दिखाया,
चतुर्भुजी निज रूप पसाया।।

भावार्थ- सद्गुरु टेऊराम जी के जन्म से चेलाराम जी का परिवार ही नहीं, बल्कि समस्त नगर आनंद और उल्लास से भर उठा। सभी ने इस दिव्य बालक के आगमन को परमात्मा का विशेष आशीर्वाद माना। जन्म लेते ही सद्गुरु टेऊराम जी ने अपनी माता कृष्णा देवी को अपना दिव्य चतुर्भुज स्वरूप दिखाकर यह संकेत दिया कि वे कोई साधारण बालक नहीं, बल्कि ईश्वरीय शक्ति के अवतार हैं।

श्लोक- शुक्ला तिथि षष्ठम आषाढ़े,
प्रकट भए सब काज संवारे।
शनिवार का दिवस सुहाना,
शशि सम चमकत रूप जहाना।।

भावार्थ- आषाढ़ शुक्ल षष्ठी के पावन दिवस पर सद्गुरु टेऊराम जी का प्राकट्य हुआ। उनका जन्म मानवता के कल्याण, धर्म की रक्षा और असंख्य जीवों के उद्धार का शुभ आरम्भ बना। शनिवार के उस शुभ दिन सद्गुरु टेऊराम जी का तेजस्वी और शीतल स्वरूप चन्द्रमा के समान मनोहर था। उनके दिव्य दर्शन से सभी के हृदय श्रद्धा, शांति और आनंद से भर उठे।

श्लोक- लोली दे दे मात लुडावे,
गद् गद् गीत कण्ठ से गावे।
बालक वय से हरिगुण माहीं,
प्रीत लगी प्रभु सुमरन माहीं ।।

भावार्थ- बाल्यावस्था से ही सद्गुरु टेऊराम जी का स्वभाव अत्यंत मधुर और दिव्य था। उनकी मधुर वाणी और बाल-लीलाएँ सभी का मन मोह लेती थीं। माता कृष्णा देवी उन्हें प्रेमपूर्वक लोरी सुनाकर स्नेहपूर्वक उनका लालन-पालन करती थीं। सद्गुरु टेऊराम जी का मन बचपन से ही भगवान के गुणगान और नाम-स्मरण में लगा रहता था। सांसारिक खेलों की अपेक्षा उन्हें भजन, भक्ति और प्रभु-चिंतन में अधिक आनंद प्राप्त होता था।

श्लोक- विद्या हेतु जब उन्हें पठाय।
सतगुरु आसूराम तहं पाया।।

गुरु बोले हो स्वयं सिद्ध तुम ।
परिपूर्ण हो ब्रह्म शुद्ध तुमा।।

भावार्थ- जब उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरु के पास भेजा गया, तब गुरु ने उनके विलक्षण ज्ञान और आध्यात्मिक तेज को देखकर कहा कि यह बालक सामान्य नहीं, बल्कि जन्मजात सिद्ध आत्मा है। सद्गुरु टेऊराम जी को सद्गुरु आसूराम साहिब का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

श्लोक- बैठ एकान्त में ध्यान लगाया,
सहज समाधि के सुख को पाया।
खान पान जग विषयों माहीं,
रंचक मन कहं लागत नाहीं।।

भावार्थ- गुरु की कृपा से उन्होंने एकांत में बैठकर ध्यान और साधना का अभ्यास किया तथा आत्मिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हुए। गुरु-कृपा और साधना के प्रभाव से सद्गुरु टेऊराम जी ने ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया। वे सहज समाधि की अवस्था में स्थित होकर परम शांति और दिव्य आनंद का अनुभव करने लगे। सांसारिक भोग-विलास, स्वाद और विषय-वासनाएँ उनके मन को तनिक भी आकर्षित नहीं कर सकीं। उनका जीवन पूर्णतः संयम, वैराग्य और ईश्वर-भक्ति को समर्पित था।

श्लोक- लगन लगी गुरु शब्द मंझारी,
टूटी मोह कोह की जारी ।
बालक गण को साथ बिठाये,
राम नाम की धुनी लगाए।।

भावार्थ- गुरु के उपदेश और नाम की शक्ति ने उनके हृदय को पूर्णतः प्रभु-भक्ति में स्थिर कर दिया। गुरु-शब्द के प्रभाव से मोह, क्रोध और अन्य विकार स्वतः समाप्त हो गए। सद्गुरु टेऊराम जी स्वयं राम-नाम का निरंतर स्मरण करते और अन्य बालकों को भी भजन, सत्संग तथा नाम-जप के लिए प्रेरित करते थे। बचपन से ही उन्होंने लोककल्याण का कार्य आरम्भ कर दिया था।

श्लोक- इक दिन सिन्धू नदी किनारे,
बालक गए नहाने सारे।
वस्त्र उतार तट पर रख दीन्हां ,
टेऊराम के सुपुर्द कीना ।।

भावार्थ- एक दिन सद्गुरु टेऊराम जी अपने साथियों के साथ सिन्धु नदी के तट पर स्नान करने गए। यहीं से उनके जीवन की एक अद्भुत और दिव्य लीला का आरम्भ होता है, जिसने

सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश

गुरुदेव से प्रार्थना करें - अब मेरा उद्धार करो

ताकि अन्तिम क्षणों तक मेरा मन नाम में लगा रहे व सांसारिक इच्छा का उदय न हो ।

सद्गुरु टेऊराम चालीसा



सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। स्नान के लिए सभी ने अपने वस्त्र तट पर रखे और हर्षोल्लास के साथ नदी में उतर गए।

श्लोक- बालक जल में खेलन लागे,
खिल्लू था उन सब में आगे।
खेलत खेलत खिल्लू डूबा,
सबने देखा बड़ा अजूबा ॥

भावार्थ- सभी बालकों में खिल्लू नाम का बालक सबसे आगे था। किसी को भी यह आभास नहीं था कि कुछ ही क्षणों में एक अद्भुत घटना घटने वाली है। सभी बालक नदी में खेलते हुए आनंद मना रहे थे। खेलते-खेलते अचानक खिल्लू गहरे जल में चला गया और डूबने लगा, जिससे वहाँ उपस्थित सभी बालकों में भय और घबराहट फैल गई।

श्लोक- वस्त्र सहित गुरु जल के माहीं,
कूदे लुप्त भए फिर ताहीं।
बालक भय से रोअन लागे,
समाचार देवन कुछ भागे॥

भावार्थ- खिल्लू को बचाने के लिए सद्गुरु टेऊराम जी तुरंत नदी में कूद पड़े और कुछ समय तक दिखाई नहीं दिए। उन्हें जल में न देखकर अन्य बालक घबरा गए और भय से रोने लगे। कुछ बालक घबराकर नगर की ओर दौड़े ताकि लोगों को इस घटना की सूचना दे सकें। उधर सद्गुरु टेऊराम जी बिना किसी भय के वस्त्र सहित नदी के गहरे जल में प्रवेश कर चुके थे। यह उनके अद्भुत धैर्य, करुणा और दिव्य सामर्थ्य का परिचायक था।

श्लोक- शोकाकुल आये नर नारी।
चमत्कार देखा इक भारी॥
खिल्लू अपनी गोद उठाये।
सतगुरु जी तब बाहर आये ॥

भावार्थ- घटना का समाचार सुनकर नगर के स्त्री-पुरुष व्याकुल होकर नदी तट पर पहुँचे। जब उन्होंने गुरु की दिव्य लीला देखी, तो उनका शोक आश्चर्य और आनंद में बदल गया तथा पूरे नगर में सद्गुरु की महिमा का गुणगान होने लगा। कुछ समय पश्चात सद्गुरु टेऊराम जी जल से बाहर आए। यह दृश्य देखकर सभी आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि उनके साथ एक ऐसा चमत्कार प्रकट हुआ जिसने उपस्थित लोगों के

हृदय में गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास जगा दिया।

श्लोक- अद्भुत ऐसा देख निजारा,
विस्मित भया नगर तब सारा।
खिल्लू कहा सुनो हे भाई,
डूब गया जब मैं जल माहीं।

भावार्थ- सद्गुरु टेऊराम जी डूबे हुए बालक खिल्लू को सुरक्षित अपनी गोद में लेकर बाहर आए। यह अद्भुत दृश्य देखकर सभी लोगों को विश्वास हो गया कि गुरु की कृपा और ईश्वरीय शक्ति के आगे असंभव भी संभव हो जाता है। खिल्लू ने बताया कि जब वह जल में डूब गया, तब सद्गुरु टेऊराम जी ने उसे बचाया और वरुण देव के लोक तक ले गए। यह वर्णन गुरु की दिव्य शक्ति और उनके ईश्वर से प्रत्यक्ष संबंध का संकेत देता है।

श्लोक- सुन्दर देव वहां दो आए।
पकड़ा मुझे, वरुण ढिग लाए॥
इतने में टेऊराम पधारे।
तांको देख प्रसन्न भये सारे ॥

भावार्थ- खिल्लू ने सभी को बताया कि उसने जल के भीतर दो दिव्य देवस्वरूपों के दर्शन किए। यह अनुभव केवल एक चमत्कार नहीं, बल्कि सद्गुरु की दिव्यता और उनके अलौकिक स्वरूप का प्रमाण था। खिल्लू ने बताया कि वे दिव्य देव उसे अपने साथ ले जाने आए थे, किंतु उसी समय सद्गुरु टेऊराम जी वहाँ पहुँचे और अपनी कृपा से उसके प्राणों की रक्षा की। इससे स्पष्ट होता है कि गुरु की करुणा भक्त के जीवन की सबसे बड़ी रक्षा है।

श्लोक- अभिवादन वरुण तब कीन्हा,
निज सम्मुख ही आसन दीन्हा।
कहन लगे कुछ सेवा बताएं,
बोले खिल्लू लेन हम आए॥

भावार्थ- वरुण देव ने सद्गुरु टेऊराम जी का अत्यंत आदरपूर्वक स्वागत किया और उन्हें सम्मानपूर्वक आसन प्रदान किया। यह दर्शाता है कि देवता भी सच्चे सद्गुरु के आध्यात्मिक तेज और महानता का सम्मान करते हैं। वरुण देव ने सद्गुरु टेऊराम जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आपने इस बालक के प्राणों की रक्षा की है। वे विनम्रतापूर्वक गुरु की सेवा करने की इच्छा प्रकट करते हैं, जो गुरु के प्रति

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

आप अपनी तरफ से सबकी भलाई करते रहो। उनकी गति वे ही जानें।

सद्गुरु टेऊराम चालीसा



उनके सम्मान और श्रद्धा को दर्शाता है।

श्लोक- प्रसन्न हो तब दीन्ह विदाई,
सद्गुरु ने मम जान बचाई।
धन्य धन्य गुरु टेऊरामा,
परम पवित्र तुम्हारा नामा॥

भावार्थ- सद्गुरु टेऊराम जी ने प्रसन्न होकर वरुण देव को आशीर्वाद दिया और विदा ली। इस दिव्य घटना के बाद सभी भक्तों के मुख से एक ही स्वर निकला-धन्य हैं सद्गुरु टेऊराम जी, जिनकी कृपा से असंभव भी संभव हो जाता है। सद्गुरु का पवित्र नाम मन, वचन और कर्म को पावन बना देता है। वे करुणा और दया के सागर हैं, जो अपने शरणागत भक्तों का कल्याण कर उन्हें आध्यात्मिक सुख और शांति प्रदान करते हैं।

श्लोक- जय हो हे गुरुदेव तुम्हारी,
सुख सागर तुम अतिहितकारी।
स्वर्ण आग संग मल ज्यों त्यागहिं,
लेवत नाम पाप त्यों भागहिं॥

भावार्थ- सद्गुरु की महिमा अपरम्पार है। श्रद्धा और विश्वास के साथ उनके पवित्र नाम का स्मरण करने से मन के विकार और पाप दूर होने लगते हैं तथा जीवन में सद्गुणों का विकास होता है। सद्गुरु के पवित्र नाम का स्मरण मन को शांति और शीतलता प्रदान करता है। जिस प्रकार अग्नि में तपकर सोना अपने सभी विकारों को छोड़कर शुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार गुरु-नाम का निरंतर स्मरण मनुष्य के हृदय से पाप, अहंकार और अज्ञान को दूर कर उसे निर्मल बना देता है।

श्लोक- तप्त बुझावत हैं चन्द ज्यों,
शीतल हृदय करत नाम त्यों।
इच्छित वस्तु कल्पतरु देवे,
नाम सुमरते सब फल सेवे ॥

भावार्थ- जिस प्रकार चन्द्रमा अपनी शीतल किरणों से तपती हुई धरती को शांति देता है, उसी प्रकार सद्गुरु की कृपा जीवन के दुःखों और मानसिक अशांति को दूर करती है। गुरु भक्तों की उचित और कल्याणकारी कामनाओं को पूर्ण कर उनके जीवन में सुख, संतोष और आध्यात्मिक समृद्धि का संचार करते हैं।

श्लोक- अब तो सत्संग की धुनि लागी,
मन की माया ममता त्यागी।
डंडा झांझ लिया यकतारा,
बाजा तबला साज प्यारा॥

भावार्थ- सद्गुरु की कृपा से जब मनुष्य का मन सत्संग और प्रभु-भक्ति में लग जाता है, तब संसार की माया, मोह और आसक्ति धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है। यही सच्चे आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत है। सद्गुरु टेऊराम जी भजन-कीर्तन के माध्यम से लोगों में भक्ति का संचार करते थे। डंडा, झांझ, यकतारा, तबला और अन्य वाद्य केवल संगीत के साधन नहीं थे, बल्कि ईश्वर-नाम के प्रचार और जन-जन में प्रेम जागृत करने के माध्यम थे।

श्लोक- गली गली में धूम मचाई,
कृष्ण जैसे रास रचाई।
प्रेम बढ़ा जब खण्डू माहीं,
गुरु सोचा यहाँ रहना नाहीं॥

भावार्थ- सद्गुरु टेऊराम जी बच्चों और भक्तों को अपने साथ बैठाकर प्रेमपूर्वक भजन और सत्संग कराते थे। उनका प्रेममय व्यवहार भगवान श्रीकृष्ण की रासलीला की भाँति सभी के हृदय में आनंद, अपनापन और भक्ति का संचार करता था। खण्डू नगर के लोगों का प्रेम और सम्मान दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। किंतु सच्चे संत कभी मान-सम्मान या लोकप्रियता से बंधते नहीं। इसलिए सद्गुरु ने विचार किया कि अब किसी अन्य स्थान पर जाकर मानवता की सेवा करनी चाहिए।

श्लोक- नाम कीर्ती जय जयकारा,
इन बातों से सन्त न्यारा।
यह विचार कर बिना बताए,
जंगल में कुछ दिवस बिताए॥

भावार्थ- सद्गुरु टेऊराम जी जहाँ भी गए, वहाँ प्रभु-नाम, सत्संग और भक्ति का प्रचार हुआ। उनकी कीर्ति और आध्यात्मिक प्रभाव से नगर-नगर तथा गली-गली में ईश्वर-नाम का जयघोष गूँजने लगा। संत का जीवन वैराग्य, त्याग और निष्काम सेवा का प्रतीक होता है। वे किसी स्थान, व्यक्ति या सम्मान के मोह में नहीं बँधते। इसी भावना से सद्गुरु टेऊराम जी बिना किसी को बताए शांतिपूर्वक वहाँ से प्रस्थान कर गए। सद्गुरु टेऊराम जी ने एकांत जंगल में निवास कर साधना और ध्यान को अपना जीवन बना लिया।

श्लोक- आसन वहाँ जमाया स्थिर,
हिंसक जन्तू का था ना डरा।
खोज खोज प्रेमी वहाँ आए,
लौट चलें सबने समझाए॥

भावार्थ- उन्होंने स्थिर आसन लगाकर आत्मचिंतन एवं

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

माया की नींद से जाग्रत होकर भगवान को याद करें,
जिसने आपको मानव जीवन का स्वर्ण अवसर दिया है।

सद्गुरु टेऊराम चालीसा



ईश्वर-साक्षात्कार की साधना की, जिससे वह स्थान भी तपोभूमि बन गया। जंगल में हिंसक पशुओं का भय होने पर भी सद्गुरु पूर्ण निर्भय रहे, क्योंकि उनका विश्वास परमात्मा पर अटल था। जब भक्तों को उनके निवास का पता चला, तो वे प्रेम और श्रद्धा से उनके दर्शन करने वहाँ पहुँचने लगे।

श्लोक- थिर आसन निश्चल मन ठाना,
कहा अभी फिर लौट न जाना ।
घास फूस तृण कुटी बनाई,
कन्द मूल खा जान सुखाई।।

भावार्थ- भक्तों ने सद्गुरु से नगर लौटने का आग्रह किया, परंतु उन्होंने एकांत साधना का निश्चय कर लिया था। उनका मन परमात्मा में पूर्णतः स्थिर हो चुका था, इसलिए वे तप और ध्यान में ही निरंतर लीन रहे। सद्गुरु टेऊँराम जी ने अत्यंत सादा और त्यागमय जीवन अपनाया। घास-फूस की छोटी-सी कुटिया में रहते हुए कंद-मूल और सरल आहार से जीवनयापन किया। उनका जीवन सादगी, संतोष और तपस्या का अनुपम आदर्श था।

श्लोक- गुरुमन्त्र का कर अभ्यासा,
मेट दई जम की सब त्रासा।
आतम अन्तर वृत्ती लागी,
जगत वासना सकली भागी।।

भावार्थ- सद्गुरु टेऊँराम जी ने गुरु-मंत्र का निरंतर अभ्यास कर आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। गुरु-मंत्र की शक्ति से जन्म-मरण का भय दूर हो जाता है और साधक के जीवन में निर्भयता, शांति तथा ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न होता है। गुरु-कृपा और साधना के प्रभाव से उनके हृदय से संसार की सभी वासनाएँ और आसक्तियाँ समाप्त हो गईं। उनका चित्त पूर्णतः आत्मस्वरूप में स्थित होकर परमात्मा के ध्यान में लीन रहने लगा।

श्लोक- पावन भूमी वह जग माहीं,
हरिजन करत तपस्या जाहीं।
तिस भूमी की रज सिर लावत,
गिरिजा को कह शंभु सुनावत।।

भावार्थ- जहाँ सद्गुरु टेऊँराम जी ने तप और साधना की, वह स्थान भक्तों के लिए पवित्र तीर्थ बन गया। आज भी श्रद्धालु उस भूमि को आध्यात्मिक प्रेरणा और गुरु-कृपा का केन्द्र मानते हैं। इस चौपाई में उस तपोभूमि की महिमा का

वर्णन करते हुए कहा गया है कि भगवान शिव स्वयं माता पार्वती से उसकी पवित्रता का वर्णन करते हैं। ऐसी भूमि की धूल भी श्रद्धापूर्वक मस्तक पर धारण करने योग्य मानी गई है।

श्लोक- तीर्थ सम वह पूजन जोगी,
जहं जहं नाम जपत है योगी।
धन्य धन्य है सो अस्थाना,
अमरापुर है उसका नामा।।

भावार्थ- जहाँ भी ईश्वर का नाम-स्मरण, ध्यान और साधना होती है, वह स्थान तीर्थ के समान पवित्र बन जाता है। सद्गुरु का संदेश है कि नाम-स्मरण ही किसी स्थान को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर देता है। सद्गुरु टेऊँराम जी की तपोभूमि का नाम अमरापुर पड़ा। यह स्थान गुरु की साधना, त्याग और दिव्य उपस्थिति के कारण भक्तों के लिए श्रद्धा, आस्था और आध्यात्मिक प्रेरणा का पवित्र केन्द्र बन गया।

श्लोक- अमरापुर स्थान अमर है,
दर्श करे सो फेर न मर है।
चार धाम सम पवित्र धामा,
अमरापुर है उसका नामा ।।

भावार्थ- यहाँ 'अमर' होने का अर्थ शरीर की अमरता नहीं, बल्कि आत्मा के अमर स्वरूप का बोध है। श्रद्धा और भक्ति से इस पवित्र स्थान का दर्शन करने वाला साधक आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता है और जन्म-मरण के बंधनों से मुक्ति की प्रेरणा प्राप्त करता है।

श्लोक- तांकी महिमा कही न जाई,
शेष शारदा पार न पाई ।।

भावार्थ- अमरापुर धाम की महिमा चारों धामों के समान पवित्र और कल्याणकारी बताई गई है। उसकी आध्यात्मिक महत्ता इतनी महान है कि उसका पूर्ण वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं है।

श्लोक- बैठ जहां गुरु ज्ञान सुनाया,
सत्नाम साक्षी मंत्र जपाया।
प्रेम प्रकाशी पंथ बनाया,
सोए जीवों को था जगाया।।

भावार्थ- सद्गुरु टेऊँराम जी ने इसी पावन स्थान पर भक्तों को आत्मज्ञान प्रदान किया और 'सत्नाम साक्षी' मंत्र का उपदेश देकर सत्य, नाम-स्मरण और ईश्वर-साक्षात्कार का सरल मार्ग बताया। सद्गुरु टेऊँराम जी ने प्रेम प्रकाशी पंथ की स्थापना

**सद्गुरु हरिदासराम
वचनावली**

अहंकार को समाप्त किये बिना शान्ति सम्भव नहीं ।

सद्गुरु टेऊँराम चालीसा



कर मानवता को प्रेम, सेवा, समानता और प्रभु-भक्ति का संदेश दिया। उन्होंने अज्ञान में सोए हुए असंख्य लोगों को आत्मज्ञान और सत्य के प्रकाश से जागृत किया।

श्लोक- जब तक गंग यमुना का पानी,
तब तक अमर रहेगी कहानी।
सूर्य चन्द्र प्रकाश हैं जौ लौं,
नाम प्रकट जग में तब तौ लौं।।

भावार्थ- जब तक गंगा और यमुना की पवित्र धाराएँ प्रवाहित होती रहेगी, तब तक सद्गुरु टेऊराम जी का जीवन, उनका संदेश और उनकी महिमा श्रद्धालुओं के हृदय में अमर बनी रहेगी। जब तक सूर्य और चन्द्रमा इस संसार को प्रकाश देते रहेंगे, तब तक सद्गुरु टेऊराम जी का पवित्र नाम और उनका आध्यात्मिक संदेश संसार में उज्ज्वल होता रहेगा।

श्लोक- अमर देश से आगमन,
अमर देश प्रस्थान।
अमरापुर वाणी अमर,
अमरापुर स्थान।।

भावार्थ- सद्गुरु टेऊराम जी का अवतरण दिव्य लोक से मानवता के कल्याण के लिए हुआ और अपना कार्य पूर्ण करके वे पुनः उसी परमधाम में विराजमान हुए। संतों का जीवन लोककल्याण के लिए होता है, न कि केवल अपने लिए। सद्गुरु की वाणी, उनका संदेश और अमरापुर धाम आज भी श्रद्धालुओं के लिए आध्यात्मिक प्रेरणा के अमर स्रोत हैं। उनका प्रभाव समय के साथ और अधिक व्यापक होता जाता है।

श्लोक- आप अमर चरित्र अमर,
अमर आपका नाम।
तब शरणागत भी अमर,
धन गुरु टेऊराम।।

भावार्थ- सद्गुरु टेऊराम जी का जीवन, उनके आदर्श और उनका पवित्र नाम युगों-युगों तक श्रद्धा के साथ स्मरण किए जाते रहेंगे। उनका चरित्र मानवता के लिए सदैव प्रेरणादायक रहेगा। जो श्रद्धा, विश्वास और समर्पण के साथ सद्गुरु की शरण ग्रहण करता है, वह आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करता है। गुरु की कृपा से उसका जीवन सार्थक बनता है और वह आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर होता है।

श्लोक- साधु सन्त सब पूज्य हैं।

सबको है प्रणाम।
स्वासों में पर रम रहे।
सत्गुरु टेऊराम।

भावार्थ- सद्गुरु टेऊराम जी का संदेश है कि सभी संत-महात्मा आदरणीय हैं। हमें किसी भी संत या धर्म के प्रति भेदभाव नहीं रखना चाहिए, बल्कि सभी का सम्मान और आदर करना चाहिए। सच्चा साधक प्रत्येक श्वास के साथ सद्गुरु का स्मरण करता है। जब गुरु का नाम जीवन का आधार बन जाता है, तब मन सदैव शांति, प्रेम और परमात्मा की उपस्थिति का अनुभव करता है।

श्लोक- चालीसा गुरुदेव की।
पढ़े सुने जन जोया।
श्रद्धा मन में जो धरो।
मुक्ती पावे सोया।।

भावार्थ- जो श्रद्धा और विश्वास के साथ इस चालीसा का पाठ करता है अथवा सुनता है, वह सद्गुरु की कृपा का अधिकारी बनता है और उसके जीवन में आध्यात्मिक जागृति का आरम्भ होता है। इस चालीसा का सच्चा फल केवल पाठ करना नहीं, बल्कि श्रद्धा, विश्वास और सद्गुरु के उपदेशों को जीवन में अपनाना है। ऐसा साधक अंततः आत्मिक शांति, परम आनंद और मोक्ष की दिशा में अग्रसर होता है।

समापन

“सद्गुरु टेऊराम चालीसा” केवल एक स्तुति नहीं, बल्कि सद्गुरु टेऊराम जी के दिव्य जीवन, तप, त्याग, गुरु-भक्ति, नाम-स्मरण, प्रेम, सेवा और मानव कल्याण के संदेश का आध्यात्मिक दस्तावेज है। यह चालीसा हमें सिखाती है कि सच्चे सद्गुरु की शरण, “सत्नाम साक्षी” का स्मरण, निष्काम सेवा और समस्त मानवता के प्रति प्रेम ही जीवन को सार्थक बनाने का मार्ग है। जो श्रद्धा और विश्वास के साथ सद्गुरु की वाणी को पढ़ता, सुनता और जीवन में धारण करता है, उसके हृदय में शांति, भक्ति और आध्यात्मिक प्रकाश का संचार होता है।

प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक-
सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज

लेखक- आकांक्षा दरियानी
मोहन लाल दरियानी, कानपुर

सद्गुरु टेऊराम अमृतोपदेश

अपने गुरु में शिष्य की प्रीति, प्रेम, श्रद्धा व विश्वास होना चाहिए।

सद्गुरु टेऊराम चालीसा



सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 49वाँ वरसी उत्सव मनाया गया



जयपुर। प्रेम प्रकाश पंथ के प्रवर्तक आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के परम शिष्य एवं द्वितीय पादशाही महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का ४९वां पंच दिवसीय वरसी उत्सव (महानिर्वाण दिवस) १४ से १८ अगस्त २०२६ तक पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान, जयपुर सहित देश-विदेश में स्थित प्रेम प्रकाशा आश्रमों पर अत्यंत श्रद्धा, व भक्ति के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर वरसी महोत्सव के प्रथम दिन परम्परागत रूप से श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्रीमद्भगवद् गीता के पाठ रखे गये। वरसी महोत्सव के अंतर्गत विभिन्न सेवा-प्रकल्पों का आयोजन अलग-अलग शहरों में किया गया।

उत्सव के अंतिम दिन प्रातः ७.०० से ११.०० बजे तक नित्य नियम, प्रार्थना, संतों द्वारा भजन-संकीर्तन, स्वामी जी के अमृतमयी प्रवचन कैसेट का श्रवण एवं महाआरती का आयोजन किया गया।

महानिर्वाण दिवस के अवसर पर श्री अमरापुर स्थान परिसर में स्थित स्वामी सर्वानन्द जी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के पवित्र समाधि स्थल तथा मुख्य मंदिर का देश-विदेश से मंगाए गए

सुगंधित ऋतु पुष्पों से मनमोहक व अलौकिक श्रृंगार किया गया। सुबह से लेकर देर शाम तक हजारों श्रद्धालुओं ने कतारबद्ध होकर समाधि स्थल पर शीश नवाया, श्रद्धा के पुष्प अर्पित किए और आशीर्वाद प्राप्त किया।

७०-७५ वर्ष पूर्व विभाजन के समय जयपुर में हुआ था श्री अमरापुर स्थान का निर्माण। पूज्य संत मण्डल ने इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने लगभग ७०-७५ वर्ष पूर्व विभाजन की त्रासदी के समय सिंध से भारत आकर छोटी काशी गुलाबी नगरी जयपुर में अपने कर-कमलों से इस दिव्य “श्री अमरापुर स्थान” की स्थापना की थी। उनकी तपोबल और भक्ति की दिव्य शक्ति आज भी यहाँ साक्षात् अनुभव होती है। सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज द्वारा रचित पावन आध्यात्मिक वाणी (दोहे, पद, छंद, भजन, कवित्त) को संजोकर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने ही “श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब” का स्वरूप प्रदान किया था, जिसका नित्य पाठ कर आज लाखों श्रद्धालु अपने जीवन को धन्य बना रहे हैं।

प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल को सत्संग के आयोजन में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की महिमा का वर्णन पूज्य संतों द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिवस पाठों का भोग साहब हुआ तत्पश्चात् आम भण्डारे का आयोजन किया गया जिसमें हजारों प्रेमियों ने भण्डारे का प्रसाद ग्रहण कर अपना जीवन सफल किया।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

पुरुषार्थ ही दैव है इसलिए पुरुषार्थ करो। पुरुषार्थी की जय है।



सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जलसमाधि दिवस मनाया गया:



हरिद्वार। परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की पार्थिव देह को उनकी आज्ञानुसार हरिद्वार में 90 नं. घाट पर भगवती माँ गंगा की गोद में सुपुर्द किया गया था। उसी स्मृति को प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा प्रतिवर्ष

मनाया जाता है। इस वर्ष भी जल समाधि दिवस गुरुवार,

२० अगस्त को हरिद्वार में बड़े ही भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रेम प्रकाश आश्रम, भोपतवाला से प्रातः संकीर्तन प्रभातफेरी संतों के सानिध्य में निकाली गई जो स्वामी सर्वानन्द घाट से होते हुए स्वामी सर्वानन्द स्मृति स्थल (90 नं. घाट) पर सम्पन्न हुई। वहाँ पहुँचने पर हवन यज्ञ, ध्वजावंदन व स्नानादि के पश्चात् प्रसादी वितरण का कार्यक्रम बड़े ही प्रेमभाव के साथ संतों द्वारा सम्पन्न कराया गया। उसके बाद आश्रम पर आकर पाठों के भोग पश्चात् सैकड़ों ब्राह्मणों व मण्डलेश्वरों-संतों की भोजन भण्डारे भेंटादि द्वारा सेवा की गई। इस अवसर पर स्वामी मनोहरलाल जी महाराज, सन्त मोनूराम जी, सन्त श्यामलाल जी, सन्त नन्दलाल जी, संत हिमांशु एवं अन्त संतों के साथ-साथ बड़ी संख्या में जयपुर एवं अन्य स्थानों से आये प्रेमीगण उपस्थित थे।



सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

जब आप दूसरों को सुखी करते हैं, तो स्वयं भी सुख का अनुभव करते हैं।
फिर क्यों दूसरों को दुःखी करते हैं।



!! ॐ सत्नाम साक्षी !!

श्री वृंदावन धाम में

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के आशीर्वाद से
प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में

**सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज
का पावन स्मरण दिवस**

30-8-26 रविवार **समय : प्रातः 10 से 2 बजे तक**

स्थान: श्री कृष्ण जन्माष्टमी आश्रम ऑडिटोरियम
अक्षय पात्र के सामने, चैतन्य विहार, मयुरा-वृंदावन रोड

आयोजक : श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

॥ ॐ सत्नाम साक्षी ॥
पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में

प्रेमामूर्ति सद्गुरु स्वामी
शान्तिप्रकाश जी
महाराज का

**120 वां
जन्मोत्सव**

24 अगस्त (सोमवार) से 28 अगस्त (शुक्रवार) 2026

प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 एवं सायं 5 से 7
प्रार्थना.. सत्संग.. प्रवचन कैसेट... आरती

28 अगस्त (शुक्रवार) रक्षाबंधन पर्व
प्रातः 7 से 11 - सारंग, पाठों का भोग साहब
भगवान श्री रावणाराधना कथा, मूल प्रतिमाओं
का पूजन व रक्षासूत्र पहारन, दीप प्रज्ज्वलन,
आम भण्डारा (11 से 1 बजे तक)

30 अगस्त (रविवार) 2026
सद्गुरु शान्तिप्रकाश जी महाराज की पुण्यतिथि

सभी भक्त दर्शन-सत्संग का लाभ लें।

S.M.R.

॥ ॐ सत्नाम साक्षी ॥
पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में

→ मर्यादापूर्ति सद्गुरु →
स्वामी हरिदासराम जी
महाराज का

**26 वाँ
वर्षी उत्सव**
(पुण्यतिथि)

3 सितम्बर (गुरुवार) से 7 सितम्बर (सोमवार) 2026

प्रतिदिन भजन-सत्संग
प्रातः 7 से 9 / सायं 5 से 7

3 सितम्बर (गुरुवार)
प्रातः 7 से 9
प्रार्थना.. सत्संग..
पाठों का सुमंगल

7 सितम्बर (सोमवार) पुण्यतिथि
प्रातः 7 से 11
प्रार्थना.. संतो का सत्संग.. पाठों का
भोग साहब.. आरती.. आम भण्डारा

सभी प्रेमी पाँचों दिन दर्शन-सत्संग का लाभ लें।

S.M.R.

॥ ॐ सत्नाम साक्षी ॥
पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में

**श्री कृष्ण
जन्माष्टमी**
महोत्सव

4 सितम्बर, 2026 (शुक्रवार)

प्रातः 7 से 9:30
प्रार्थना.. सत्संग.. हवन-यज्ञ..

सायं 5 से 7:30
भजन.. संकीर्तन.. कृष्ण लीला मूल..
गीता.. वन्द्य.. श्यामवत के
पाठों का भोग साहब..

रात 11:30 से 12:30
संकीर्तन.. भगवान का अभिषेक..
आरती.. खीर प्रसादी..

S.M.R.

**इसी प्रकार देश-विदेश रिश्तात सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर
सभी उत्सव बड़े ही भक्तिमय वातावरण में मनाये जायेंगे।**

**सद्गुरु हरिदासराम
वचनावली**

हमारी प्रार्थना का 'सार-तत्त्व' क्या होना चाहिये ? मुक्ति ।



प्रेममूर्ति सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का 120 वां पंच दिवसीय जन्मोत्सव भक्तिभाव से प्रारंभ

श्रीमद्भगवद्गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठों के साथ हुआ शुभारंभ



स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज करेंगे सत्संग

जयपुर (सिन्धु गौरव न्यूज)

आस्था एवं भक्ति के परम पावन तीर्थ केंद्र श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय पीठाधीश, ब्रह्मलीन आचार्य सद्गुरु स्वामी टेकराम जी महाराज के अन्त्य शिष्य प्रेममूर्ति सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का 120वां पावन पंच दिवसीय जन्मोत्सव सोमवार, 24 अगस्त 2026 से अत्यंत श्रद्धा, उल्लास और भक्तिभाव के साथ प्रारंभ हुआ।

सोमवार प्रातः 7:00 बजे वेदपाठी विद्वानों एवं आचार्यों के पावन सान्निध्य में पूर्ण विधि-विधान व वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब एवं श्रीमद्भगवद्गीता जी के पाठों का पूजन कर शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात् नित्य नियम, सामूहिक प्रार्थना, भजन-संकीर्तन और महाआरती के पावन अनुष्ठान संपन्न हुए।

“सूरज बनकर जग में चमके
पूर्ण पुरुष भगवान स्वामी शांतिप्रकाश महान”

सत्संग के दौरान पूज्य संत श्री मोहन प्रकाश जी महाराज एवं स्वामी मनोहर लाल जी महाराज ने स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज के दिव्य जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि:

“स्वामी जी महाराज साक्षात् प्रेम और करुणा की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने अंतरात्मा के दिव्य नेत्रों से भगवान श्री कृष्ण के साक्षात् दर्शन किए और चराचर जगत के कण-कण में प्रभु की अनुभूति की। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन सद्गुरु स्वामी टेकराम जी महाराज के पावन चरणों में समर्पित कर निष्काम सेवा और अनन्य भक्ति की अलौकिक मिसाल कायम की।”

॥ ॐ सत्नाम साक्षी ॥

तर्ज:- तेरी प्यारी प्यारी सूरत को किसी की...

थलु:- मुहिजां सतगुरु शांति प्रकाश सच्चा-
तुहिजी महिमा आहें अपार, मिठा मनठार॥
तुहिजी मन मोहिंदुड मूरत तां-
मां सदा बना बलहार, मिठा मनठार॥

1. तुहिजी मिठड़ी मिठड़ी वाणी हुई - जा सर्व सुखनि जी खाणी हुई, हो सोझ भखल आवाज तुहिजे में- सरल तुहिजी समझाणी हुई, मन मोहन जी मुल्लैअ वारे- ये मिठी बगी झंकार, मिठा मनठार॥
2. जड़े सतगुरु तोले कृपा कई- अनुभव जी खुली सिङ्कीरी पई, स्वामी टेकराम जी कृपा सो-मिली ज्योत अंदर जी सोतो कई, तुहिजे भजननि में भखल आह-गुरु महिमा जो बिस्तार, मिठा मनठार॥
3. तो आहें बड़े के मान डिनो-ऐ सभ कहिजे सपान डिनो, मुरजाडेनि ऐ मोधाजनि छे-तो दिल खोले हो वान डिनो, अंधनि मंडनि अयलकैनि जो-तो साजन लखी सम्भार, मिठा मनठार॥
4. सरालिन जा सखात घुआया सो- अर्जिन जा अर्ज अगावा तो, जेके भाव रही आवा धरनिनि में- हो तिनहों पार लगाया तो, सिक वारनि जा सखत सार्ई- तो बड़े छडिया भण्डार, मिठा मनठार॥

S.M.R

॥ ॐ सत्नाम साक्षी ॥

तर्ज:- रेशमी सलवार कुर्ता...

थलु:- चक जी नगरीअ में वरी वाधाई आ,
आयो अजु सतगुरु मुहिजां सुखदाई आ ।

1. महिनो सावण जो सुखरासी- हुई पावन पूरण मासी, रखड़ीअ जे शुभ दिहाड़े ते- आयो अमरपुर जो वासी, खुशी अजु छाई आ ॥
2. जहिजी माता जुगल जोगियाणी- हुई भगवत जी भगितियाणी, पिता आसुराराम उदारो- हो सभिन सुखनि जी खाणी, कई जहि कगाई आ ॥
3. नन्दपिण सां जोगीअ जागी- दुनियां जी तमना त्यागी, मिल्खे सतगुरु जहिसें पूरन- स्वामी टेकराम वैरगी, जहिं महर वसाई आ ॥
4. जगत सां करे किरारो- रीझायो रंगलु पायो, पाप जोति अन्दर जी निर्मल- निठो सभ में मुल्लैअ वारे, मिठाई ब्याई आ ॥

S.M.R

॥ ॐ सत्नाम साक्षी ॥

तर्ज:- जन्म लही अजु जोगी आयो....

थलु:- जन्म दीहू जोगीअ जो मनायो।
देह धरे धरतीअ ते स्वामी, शांति प्रकाश आ आयो ॥

- 1-रक्षा बंधन दीहू मंगल जो-सावण पूरण मासी।
सिंध देश जे चक नगरीअ में प्रभु पाण पधारियो ॥
- 2-पिता आसुराराम आ जहिजो-संत सेबी निष्कामी।
जीजल जुगल जगत सां न्यारी-तहिं घर सतगुरु आयो ॥
- 3-नंदिपण सां घरबार त्यागे-सतगुरु शरणी आयो।
नाम बटी स्वामी टेकराम सां-पाण जपियो ऐं जपायो ॥
- 4-गुरु कृपा सां मिठयो अंधेरो-अनभइ अखिड़ियूं खुनियूं।
जस्त समूरो फानी जाणी-सब छे नाम जपायो ॥
- 5-सतगुरु सर्वानन्द साहिब जी - गादी जहिं हुई वसाई।
देश विदेश में प्रेम प्रकाशी-झण्डो जहिं त झुल्लायो ॥
- 6-जगत जे कल्याण करण लइ-सतगुरु आयो अवतारी।
मिठड़ी ब्राणी बोले सभ सां-सब से गले लगायो ॥

S.M.R

सद्गुरु टेकराम अमृतोपदेश

जहाँ तक हो सके तीनों अवरस्थाओं बाल, जवानी, वृद्धावरस्था में भक्ति करनी चाहिए।
भक्ति के द्वारा ही मनुष्य परम पद अविनाशी देश को पा सकता है।



परम पूज्य स्वामी जीवनमुक्त महाराज जी का 47वाँ वर्सी उत्सव श्रद्धा एवं भक्ति के साथ सम्पन्न

अहिल्यानगर। ७ एवं ८ जुलाई २०२६ को प्रेम प्रकाश मंदिर, अहिल्यानगर में परम पूज्य स्वामी जीवनमुक्त महाराज जी का ४७वाँ वर्सी उत्सव अत्यंत श्रद्धा, भक्ति एवं आध्यात्मिक उल्लास के साथ मनाया गया। इस पावन अवसर पर परम पूज्य साई लक्ष्मण प्रेम प्रकाशी जी, पूज्य संत मंडली, श्रद्धालु भक्तों तथा बच्चों की गरिमामयी उपस्थिति ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

७ जुलाई को प्रातः हवन के साथ कार्यक्रमों का शुभारंभ हुआ। इसके पश्चात स्वामी टेऊराम मंदिर, पाराशर गली, मालीवाड़ा में संत मंडली द्वारा सत्संग किया गया तत्पश्चात् प्रसाद वितरण किया गया। सायंकाल प्रेम प्रकाश मंदिर में संत मंडली द्वारा पुनः सत्संग का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर गुरु-वाणी का अमृतपान किया।

समारोह का विशेष आकर्षण बच्चों द्वारा परम पूज्य साई लक्ष्मण प्रेमप्रकाशी जी के स्वागत में प्रस्तुत किया गया स्वागत नृत्य रहा। बच्चों की भावपूर्ण एवं मनमोहक प्रस्तुति ने उपस्थित सभी श्रद्धालुओं का हृदय जीत लिया और पूरे वातावरण को उल्लास एवं भक्ति से भर दिया।

८ जुलाई को प्रातः मूर्ति पूजा के साथ कार्यक्रमों का शुभारंभ हुआ। इसके उपरांत संत मंडली द्वारा सत्संग एवं प्रसाद वितरण किया गया। सायंकाल आयोजित सत्संग में भक्तगण भजन, गुरु-वाणी एवं आध्यात्मिक संदेशों से भावविभोर हो उठे। तत्पश्चात श्री प्रेमप्रकाश ग्रंथ का भोग साहिब सम्पन्न हुआ तथा उत्सव का समापन आम भंडारा (लंगर महाप्रसादी) के साथ हुआ।

दूसरे दिन बच्चों द्वारा प्रस्तुत “कर्म” विषय पर आधारित एक प्रेरणादायक नाटिका समारोह का विशेष आकर्षण रही। इस प्रभावशाली प्रस्तुति के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि मनुष्य को अपने प्रत्येक कर्म के प्रति सजग रहना चाहिए, क्योंकि हमारे कर्म ही हमारे जीवन का भविष्य निर्धारित करते हैं। सद्कर्म, सेवा, प्रेम और मानवता का मार्ग ही गुरु की सच्ची शिक्षा है।

पूज्य साई लक्ष्मण प्रेम प्रकाशी जी एवं संत मंडली ने अपने प्रेरणादायी सत्संग में प्रेम, सेवा, सदाचार और गुरु-भक्ति का संदेश देते हुए सभी को मानव जीवन को सार्थक बनाने की प्रेरणा दी। श्रद्धालु भक्तों ने अत्यंत श्रद्धा एवं उत्साह के साथ सभी कार्यक्रमों में सहभागिता कर गुरुचरणों का आशीर्वाद प्राप्त किया।

दो दिवसीय यह वर्सी उत्सव केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि प्रेम, सेवा, सत्संग और संस्कारों का अनुपम संगम सिद्ध हुआ। मंदिर समिति, सेवादारों, बच्चों एवं समस्त श्रद्धालुओं के सहयोग से यह आयोजन अत्यंत सफल एवं अविस्मरणीय बना। अंत में सभी ने परम पूज्य स्वामी जीवनमुक्त महाराज जी के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने का संकल्प लिया और विश्व कल्याण की प्रार्थना की।

स्वामी टेऊराम जन्मोत्सव मनाया गया

अहिल्या नगर। (अहमदनगर) मालीवाड़ा पार गली स्थापित तपोनिष्ठ युगपुरुष मंगलमूर्ति सतगुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज की भव्य दरबार में साई टेऊराम महाराज का १४०वां जन्मोत्सव बड़े ही हर्ष उल्लास और धूमधाम बैंड बाजों के साथ मनाया गया। जन्मोत्सव के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ सेवादारी जीवतराम के सानिध्य में मनाये गए जन्मोत्सव मेले की शुरुआत पूजा पाठ प्रार्थना से हुई चालीहा महोत्सव में दीन-बंधुओं की सेवा, अन्न वितरण, कन्या भोज तथा ब्राम्हणों को भोजन कराया गया एवं सतनाम साक्षी गौशाला में गौ सेवा पंढरपुरी वारकरी की सेवा एवं भोजन वितरण किया गया एवं ५६ भोग झांकी के अंतर्गत सैकड़ों व्यंजन बाबा के समक्ष भोग के लिए प्रस्तुत किए। गुरु महाराज जी का बाल स्वरूप अति सुंदर व मनमोहक था तत्पश्चात भजनों एवं बधाई गीतों से सभी प्रेमी झूम उठे एवं महा आरती पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया गया सभी प्रेमियों ने प्रसादी पाई !

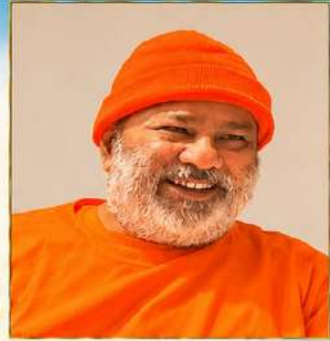


ॐ श्री सतू नाम साक्षी

प्रेम प्रकाश

संदेश सूचना समाचार सेवा

परम आदरणीय गुरुवर सदगुरु



स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का
सितम्बर - अक्टूबर 2026 माह तक का

आगामी विदेश यात्रा कार्यक्रम

	02 सितम्बर	- यात्रा
	03 सितम्बर से 09 सितम्बर	- जापान
	10-11 सितम्बर	- हवाई
	12 सितम्बर	- यात्रा
	13 सितम्बर से 14 सितम्बर	- लॉस एंजिलिस
	15 सितम्बर	- यात्रा
	16 सितम्बर से 22 सितम्बर	- न्यू यॉर्क
	23 सितम्बर	- यात्रा
	24 सितम्बर से 30 सितम्बर	- लासपालमस (स्पेन)
	01 अक्टूबर	- यात्रा
	02 अक्टूबर	- भारत वापसी

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

दिखाकर खाना शर्मिंदगी है। छुपाकर खाना गंदगी है। बाँटकर खाना बंदगी है।



अमरापुर गमन



श्री रोहित गिदवानी

लखनऊ। गुरुचरणों के सेवक, कर्मठ, सेवाभावी श्री रोहित गिदवानी सुपुत्र श्री निर्मल गिदवानी 92 अगस्त 2026 को आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे। आपकी अंतिम यात्रा में संत श्री सुन्दरदास जी शामिल हुए एवं पूज्य महाराजश्री ने पल्लव पाकर दिवंगत आत्मा को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊराम जी महाराज से प्रार्थना की। आप नित-नियम से आश्रम पर नाम-जप एवं सेवा-सत्संग में सेवारत रहते थे।

श्रीमती आशादेवी टेकवानी



बैकौक। शांत, कर्मठ सेवाभावी माता श्रीमती आशादेवी टेकवानी 99 अगस्त 2026 को 22 वर्ष की आयु में अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी। श्री दीपक टेकवानी की पूजनीय माताश्री का जन्म सिंध के लाडकाना में हुआ था एवं वर्तमान में बैकौक में निवासरत थी।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।



- 17 अगस्त 2026- सोमवार- नागपंचमी
- 18 अगस्त 2026- मंगलवार- चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
- 18 अगस्त 2026- मंगलवार- साईं सर्वानन्द वर्सी उत्सव
- 19 अगस्त 2026- बुधवार- नंढी सतई
- 20 अगस्त 2026- गुरुवार- साईं सर्वानन्द जल समाधि दिवस
- 23 अगस्त 2026- रविवार- पवित्रा एकादशी
- 28 अगस्त 2026- शुक्रवार- रक्षा बन्धन/ नारियल पूर्णिमा
- 28 अगस्त 2026- शुक्रवार- साईं शांतिप्रकाश जन्मोत्सव

- 30 अगस्त 2026- रविवार- साईं शांतिप्रकाश पुण्यतिथि
- 01 सितम्बर 2026- मंगलवार- गणेश चतुर्थी
- 03 सितम्बर 2026- गुरुवार- थदिड़ी (वढी सतई)
- 03 सितम्बर से 07 सितम्बर- सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज 26वां वर्सी उत्सव
- 04 सितम्बर 2026- शुक्रवार- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
- 07 सितम्बर 2026- सोमवार- अजा एकादशी
- 07 सितम्बर 2026- सोमवार- सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज पुण्यतिथि
- 11 सितम्बर 2026- शुक्रवार- अमावस्या
- 13 सितम्बर 2026- रविवार- चन्द्र दर्शन
- 14 सितम्बर 2026- सोमवार- गणेश चतुर्थी
- 19 सितम्बर 2026- शनिवार- महालक्ष्मी सगरा बुधण

**सद्गुरु हरिदासराम
वचनावली**

मृत्यु का अर्थ होता है, यहाँ न होना, न होना नहीं।



आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊराम महाराज द्वारा रचित

‘ब्रह्मदर्शनी’

सिंधीअ में समुजाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं जुलाई २०२६ अंक खां अगिते- ॥दशपदी-19॥

राम भजन से शोभत जीया, शोभत नारी ज्यों संग पीया।
राम भजन से शोभत काया, नीत धर्म से जैसे राया।
राम भजन से शोभत रसना, नीमक से ज्यों भावत अशना।
राम भजन से शोभत आयू, त्रिविध भूषण से जिमि वायू।
राम भजन से शोभत चाली, टेऊं जिमि मालिक से माली॥5॥

“राम जो, ईश्वर जो भजनु करण सां जीउ, हिरदो संहंदो आहे, जीअं का नारी/स्त्री पंहिजे प्रीतम/पतीअ सां गडु हूंदे संहंदी, शोभा डींदी आहे. जीअं कोई राजा नीति ऐं धर्म जो पालनु करण सां संहंदो आहे, तीअं मनुष जो शरीरु ईश्वर जो भजनु-सुमिरनु करण सां संहंदो, सुहिणो लगंदो आहे. जीअं लूण सां भोजनु (अशना) सुठो लगंदो आहे, तीअं राम जो भजनु करण सां मनुष जी जिभ (रसना) सुहिणी लगंदी आहे. परमात्मा जो भजनु करण सां मनुष जी आयू/उमिरि इएं संहंदी आहे, जीअं शीतल मंद, सुगन्ध इन्हनि टिनि गुणनि सां वायू सुहन्दी आहे। सत्गुरु स्वामी टेऊराम महाराजनि चवनि था, “जीअं मिलिकयत, खजानो, सम्पत्ति पंहिजे मालिक सां संहन्दी आहे, तीअं राम-भजनु सां मनुष जो आचरणु/हलति/वर्ताउ (चाली) संहंदो आहे.”

संसार जी का बि गाल्हि अगर ठहकंदड, जोगाईती हूंदी त सुंदरु ऐं वणंदड लगंदी आहे. बिनि शयुनि, पदार्थनि या गाल्हियुनि जो मेलु ठहकंदड हूंदो त उहा वधीक संहंदी आहे ऐं वणंदी बि आहे. मोतियुनि जो हारु गले में संहंदो आहे, गुलु बूटे/वण सां गडु सुहिणो लगंदो आहे, तुलसी घर जे अडण में संहंदी आहे आदि. अहिडीअ रीति राम जो, भगवान जो नामु जपण सां मनुष जी जिभ, हृदय ऐं शरीरु पिणु संहंदो आहे. संत तुलसीदास जो चवणु आहे त राम जा नामु बेसहारनि जो सहारो आहे, सभिनी सुखनि जो सारु आहे, भगवत्-प्राप्तीअ जो प्रधानु कारणु आहे. राम-नाम सां प्रेम करण वारे जो हर तरह सां भलो थिए थो. संत समर्थ रामदास जे शब्दनि में, ‘सदा सर्वदा नाम वाचें वसों दे। अहंता मनीं पापिणी नसों दे।।’ अर्थात् सदाई राम जो नामु मुख/वाणीअ में हुअणु घुरिजे. मन में पापी अहंकारु न हुअणु घुरिजे. मनुष जी वाचा, जिभ, ज़बान या वाणी चइनि प्रकारनि जी आहे. परा-पश्यंती - मध्यमा-वैखरी

परा जो स्थान मूल कमल, पश्यन्ती जो स्थान हृदय कमल
मध्यमा जो स्थान कण्ठ कमल, वैखरी जो स्थान जिह्वा आहे।
वाणीअ जा चारई सतह या प्रकार राम नाम सां भरिजी
वजणु घुरजनि, नाम साधाना अहिडी हुअणु घुरिजे। (हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सत्री प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव, समाधिआ कॉलोनी, तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।

कार्यालय: प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
सम्पादक : प्रहलाद सबनानी

प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

- व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढवे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)